

तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥
अतएव द्विजैरेतदध्येतव्यं प्रयत्नतः ॥ ”

अर्थ—इसका यह है कि सिद्धान्त, सदिता और होरारूप ज्योतिषशास्त्र वेदका निर्मल नेत्र है विना इसके श्रौत तथा स्मार्त कर्म सिद्ध नहीं होता है इसलिये ब्रह्माजीने प्रथमही इसकी रचना करी है इसलिये तीनों वर्णोंको इसका अध्ययन करना अत्यावश्यक है, परन्तु हाल विकराल कालिकालके प्रसंगसे और पाश्चिमात्यलोगोंकी सगतिसे लोगोंकी श्रौत स्मार्तकर्मोंमें अभिरुचि कमती होनेपर इस शास्त्रकी आवश्यकता दिन प्रतिदिन कम होने लगी है. “ राजा कालस्य कारणम् ” आज कलके अपने भारतभूमिके सम्राट् विदेशी, परधर्मी और व्यापारी वर्गके हैं जिससे प्रवृत्ति व्यापारके मार्गमें विशेष होनेलगी. व्यापारका अवलम्बन करनेसे द्रव्याभिलाषा बढ़ने लगी, द्रव्याभिलाषा बढ़नेसे कर्मकी आस्था कम हुई परन्तु यह नहीं सोचते हैं कि अपने वर्णाश्रमधर्म छूटनेसे स्वयं पूर्ण विपत्तिमें जाफसे हैं और कितनेक लोग जो शुभाशुभ कार्यका आरंभ करते हैं वहभी बिना पट्टे मनुष्यके द्वारा और ज्योतिषीको पूछे बिनाही करते हैं जिससे उक्तकालमें कार्यका आरंभ और समाप्ति न होनेसे उस कर्मका शास्त्रोक्त फल नहीं प्राप्त होता है परन्तु विपरीत फल मिलता है. जिससे ज्योतिषशास्त्र जानना अत्यावश्यक है. इस शास्त्रके अनुसार कार्य करनेसे अनेक प्रकारके हेतु सफल होते हैं. वराहमिहिराचार्य कहते हैं कि “ नासावसरिके देशे वस्तव्यं भूतिमिच्छता ॥ चक्षुर्भूतो हि यत्रैव पाप तत्र न विद्यते ॥ ” अर्थात्—जिस देशमें ज्योतिषी नहीं हैं वहापर ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवाला पुरुष नहीं रहे क्योंकि ज्योतिषी सब लोगोंका नेत्र है, वह जहापर है वहापर पाप नहीं वसता है. इस ज्योतिषशास्त्रकी जाननेवाला ज्योतिषी जन्म-मृत्यु सुख-दुख-वृष्टि-जय-पराजय-रोग-शोक इत्यादि सब कृतान्त यथावत् कहसक्ता है इस कारणही एक जगहपर कहा है “ विफलान्यन्यशास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ॥ सफल ज्योतिष शास्त्र चन्द्रार्थे यत्र साक्षिणो ॥ ज्योतिषशास्त्रके विना अन्य शास्त्रोंमें विवादके सिवाय कोई फल नहीं दे, सफल तो ज्योतिषशास्त्रही है. जिसके साक्षी रूप और चन्द्रमा हैं ऐसी जिसकी योग्यता है ऐसी यह शास्त्र अति-प्राचीन अर्थात् वेदका समकालीन है इसमें सन्देह नहीं. यद्यपि इस शास्त्रके विषयमें प्राचीन तथा अर्वाचीन लोग अनेक तर्क वितर्क चलते हैं परन्तु आखिरमें इसमें प्राचीनताही सिद्ध होती है. विद्वान्, दरएक वस्तुका खोज करनेमें

पूर्ण प्रवीण पाश्चिमात्य लोगोंकी भी यह सम्मत है कि यह शास्त्र अति प्राचीन है। ऐसे इस ज्योतिषशास्त्रके प्रधान अंग दो हैं, एक गणितज्योतिष और दूसरा फलज्योतिष है। गणित ज्योतिषमें ग्रहोंकी वक्षा, स्वरूप, गति, अवस्था इत्यादिका विवेचन किया गया है और फलज्योतिषमें जन्म-मृत्यु-सुखदुःखादिका विवेचन किया है। इस गणितज्योतिषके भी तीन भेद हैं। सिद्धान्त, तन्त्र और करण, सिद्धान्तमें कल्पादिसे, तन्त्रमें युगके आदिसे और करणमें इष्टशकसे गणित करनेकी पद्धति कही है। तहां इष्टशकसे गणित करनेकी पद्धति अन्यपद्धतियोंकी अपेक्षा सहज है। इष्टशकसे गणित करनेके अनेक ग्रन्थ हैं जिसमें आजकल ब्रह्मपक्षमें भास्कराचार्य प्रणीत “करणकुतूहल” और सौरपक्षमें “ग्रहलाघव” ये दो ग्रन्थ अति माननीय हैं, परन्तु कर्णकुतूहल प्राचीन होनेसे गणितमें ग्रहोंके चालनके अभावसे स्थूलता प्राप्त होनेलगी जिससे ग्रहणादिमें बहुत फरक होनेलगा इसलिये कराची प्रान्तान्तर्गत सुरमणिग्रामवास्तव्य पंडित दयालरामजीके पुत्र पंडितरूपचन्द्रजीने कर्णकुतूहलके मध्यमाधिकारमें फेरफार करके अहर्गण और ग्रहोंके ध्रुवक तथा क्षेपक ग्रहलाघवके अनुसार लेकर और दूसरेभी कितनेक प्रकरणोंमें फेरफार करके यह “सिद्धान्तचिन्तामणि” नामका करण ग्रन्थ रचा है जिसमें प्रायः कर्णकुतूहलकेही श्लोक हैं परन्तु क्वचित्स्थलमें कितनेक श्लोक कम करादिये हैं और कितनेक बढ़ाये हैं। इस ग्रन्थसे कियेहुये ग्रहण, उदय, अस्त, ग्रहोंका वक्तीभवन, मार्गीभवन इत्यादि ग्रहलाघवके अनुसार मिलते हैं। गणितकी सुलभताके लिये इस ग्रन्थके साथमें इस ग्रन्थकी एक सारणीभी रखी गई है। कि जिससे ग्रहादि सुलभतासे बनते हैं, इसी ग्रन्थके द्वारा ब्रह्मपक्षके पंचांग बनाए जानेपर उनकी योग्यता बहुतही बढ़ेगी। इसलिये इस ग्रन्थका सर्व साधारणमें प्रसार होनेके लिये श्रीयुत पंडित श्रीधर शिवलालजीके पुत्र पंडित कृष्णलालजीने मुझे इस ग्रन्थका भाषानुवाद करनेके लिये कहा तब मैंने उक्त पण्डितजीके इच्छानुसार इस ग्रन्थका हिन्दीभाषामें अर्थ कर्णकुतूहल ग्रन्थकी टीकाके अनुसार लिखा और पण्डित श्रीधर शिवलालात्मज कृष्णलालजीको समर्पित किया। अब आशा है कि इस ग्रन्थका पर्यालोचन करके मेरे परिश्रमकी सफल करेंगे और मानवी बुद्धचनुसार जहांपर त्रुटि होगईहो उसकी पूर्णता सम्पादन करनेके लिये मुझे सूचित करेंगे, सूज्ञेवु किमधिकम् ॥

भवदीयः सीतारामशर्मा.

॥ श्रीः ॥

अथ सिद्धान्तचिन्तामणिग्रन्थस्थविषयानुक्रमणिका ।



विषयांक. विषय. पृष्ठांक.

अथ मध्यमग्रहसाधनाधिकारः १ ।

१	मंगलाचरण और ग्रन्थका नामनिर्देश	१
२	खर्गणसाधनप्रकार	१-२
३	मध्यम सूर्य, बुध तथा शुक्र लक्ष्मीकी रीति	३
४	मध्यमचन्द्र साधनप्रकार	४
५	चन्द्रोच्च तथा राहु साधनप्रकार	७
६	मध्यम मंगल तथा मध्यम शनि साधनप्रकार	५
७	मध्यम गुरु साधन प्रकार	६
८	शुक्रकेन्द्र तथा मध्यम शनि साधनप्रकार	७
९	सूर्यादिग्रहोंके ध्रुवांक	७-८
१०	सूर्यादिग्रहोंके क्षेपकांक	९
११	स्पष्टमध्यम ग्रह बनानेका प्रकार	१०
१२	सूर्यादिग्रहोंकी मध्यमगति	११

अथ स्पष्टाधिकारः २ ।

१	देशान्तरसंस्कार करनेका प्रकार	१२
२	भुज तथा कौटि साधनप्रकार	१३
३	ज्यासङ्घ और लघुज्यादि साधनप्रकार	१४
४	उदयान्तरसंस्कार साधनप्रकार	१५
५	मन्दकेन्द्रोपयोगी ग्रहोंके मन्दोच्च	१६
६	मन्दकेन्द्र, शीघ्रकेन्द्र, यद और धनमरणसंज्ञा	१७
७	ग्रहोंके मन्दपल साधनेका प्रकार	१८
८	चन्द्रमामे भुजांतरफलसंस्कार और ग्रहोंकी गतिके मन्द- फलका साधनप्रकार	१९

९	पलभा, चरखड, चर तथा चरसंस्कार	२०
१०	तिथि, करण, नक्षत्र और योगसाधन प्रकार	२२

अथ पंचतारास्पष्टीकरणधिकारः ३ ।

१	भौमादिकोंके पराह्य....	२५
२	मंगलके मन्दोच्च और पराह्यका स्पष्टीकरण	"
३	धनुःसाधनप्रकार....	२६
४	भौमादिकोंके शीघ्रफल लानेका प्रकार	२७
५	शीघ्रस्पष्टग्रहसे स्पष्टग्रह बनानेका प्रकार और मंगलमें विशेष प्रकार	२८
६	गति स्पष्ट करनेका प्रकार....	२९
७	भौमादि पांच ग्रहोंके वक्त्री होनेके शीघ्रकेन्द्रके अंशोंका कथन	३०
८	मंगल, गुरु और शनि इन्होंके उदय और अस्त होनेके शीघ्रकेन्द्रांशोंका कथन....	३१
९	बुध और शुक्रके उदय और अस्तके शीघ्रकेन्द्रांश	३२
१०	भौमादि ग्रहोंके वक्र, मार्गा, उदय और अस्तके दिनादि लानेका प्रकार	३३

अथ त्रिभ्रमाधिकारः ४ ।

१	लंकोद्दय तथा उनसे स्वदेशीय उदय लानेका प्रकार	३४
२	लग्न स्पष्ट बनानेका प्रकार....	३५
३	इष्टकाल भोग्यकालसे कम हो तो लग्नसाधन प्रकार....	३७
४	लग्नसे इष्टकालसाधन प्रकार	"
५	सायनलग्न और सायनसूर्य एकराशिमें हो तो लग्नसे इष्टकाल साधन और रात्रिलग्न साधनप्रकार	३८
६	दिनार्ध, रात्र्यर्ध, नत और उन्नत साधन	३९
७	क्रांतिसाधन ...	४०
८	अक्षांश और नतांश साधनप्रकार	४१
९	अक्षकर्ण बनानेका प्रकार	४२
१०	वर्गमूल निकालनेका प्रकार....	"

अथ चंद्रयज्ञाधिकारः ५ ।

१	चर और नतकर्म साधनप्रकार	४३
---	------------------------------	----

२	तात्कालिक ग्रह करनेकी रीति	४४
३	अयन तथा गोलज्ञान और शर बनानेका प्रकार	४५
४	चन्द्रविम्ब, सूर्यविम्ब और भूभाविम्ब बनानेका प्रकार	४६
५	मानेकरांड, ग्राह और राग्रास इन्दीके बनानेका प्रकार	४७
६	मध्यस्थिति, तथा मर्द बनानेका प्रकार	४८
७	स्पर्शस्थिति, मोक्षस्थिति, स्पर्शमर्द और मोक्षमर्द बनानेका प्रकार....	४९
८	दलनसाधनप्रकार	५०
९	स्वार्थिक और मौक्षिकशरसाधनप्रकार	५१
१०	परिलेख	५३
११	ग्रहणके स्पर्श, मध्य और मोक्षके स्थान	५४
१२	सब ग्रहणोंके उपयोगी इष्टग्राहसाधन	५७

सूर्यग्रहणाधिकारः ६ ।

१	नतोव्रतांश साधनप्रकार	५९
२	लम्बन, मध्यकाल और नतिसाधन प्रकार	"
३	मध्यस्थित्यादि साधनप्रकार	६१
४	ग्रहणसमय होनेपर ग्रहण नहीं होगा ऐसा कहना और ग्रहका वर्णज्ञान....	६३
५	ग्रहणसंभव और ग्रहणस्वामी जाननेकी रीति	६४
६	सारणीसे मध्यम ग्रह बनानेका प्रकार	"
७	मन्दफल लानेका प्रकार	६६
८	बीज देनेकी रीति	"
९	शीघ्रफल लानेकी रीति	६७
१०	स्पष्टगति लानेकी रीति	"
११	अंशकारनामादिवर्णन	६८

॥ इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥

॥ श्रीहरिवन्दे ॥

अथ श्रीसिद्धान्तचिन्तामणिः ।

भाषाटीकासमेतः ।

ब्रह्माणं कमलापतिं गिरिसुतानाथं ग
णेशं गुरुन् सूर्यादिग्रहमंडलं च पितरं
नत्वाथ वागीश्वरीम् ॥ ज्योतिःशास्त्र
विवोधनाय गणितस्कन्धं विचार्याधु
ना वक्ष्येऽहं शिशुवोधनाय विशदं सि
द्धान्तचिन्तामणिम् ॥ १ ॥

भा०टी०—ब्रह्माजी; लक्ष्मीपति भगवान् श्रीविष्णु, तथा
पार्वतीपति श्रीशिवजी, गणेशजी, गुरु, सूर्यादि नवग्रह,
वाणीकी अधिष्ठात्री देवता सरस्वती तथा पिताजी इनको न-
मस्कार करके ज्योतिषशास्त्रका ज्ञान होनेकेलिये गणितस्कं-
धका विचार करके बालकोके बोधकेलिये मैं स्पष्टरीतिसे
सिद्धान्तचिन्तामणिनामक ग्रंथकी रचना करताहूँ ॥ १ ॥

अत्र प्रथम अहर्गणसाधनप्रकार कहतेहैं ।

व्यब्ध्यठजाष्टेन्दु १८१४ शाकोऽद्भगण
इह भवेदीश ११ भक्तः फलं यच्चक्राख्यं शे

पकं तु द्विशशि १२ परिहतं चैत्रतो यात
 मासैः॥ युक्तं द्विष्टं ततश्चक्रहतयम २ युता
 द्वि १० ग्युताच्चासुतस्तन्मासौघः स्या
 त्स्फुटस्त्रि ३३ विहतफलतुल्याधिमा
 सैरुपेतम् ॥ २ ॥ खत्रि ३० घ्नोऽसौ गत
 तिथियुतो व्यग्रचक्रांग ६ भागोपेतःस्व
 श्रुत्यरि ६४ लवमितैरूनघस्रैर्विहीनः ॥
 स्याद्वस्रौघोऽथ शरहतचक्रेण युक्तोऽय
 मब्जादारोऽभीष्टो भवति खलु चेन्नो
 गणो भूनयुक्तः ॥ ३ ॥

मा०टी०—वर्तमान शाकेमें १८१४ को घटानेसे गतव-
 पौका समूह होताहै, फिर उसमें ग्यारहका भाग देनेसे जो
 फल मिले उसे चक्र कहतेहैं, और जो शेष बचा होय उसको
 १२ से गुणा करे, फिर उस गुणाकारमें चैत्रसे इष्टकालताई
 जितने मास गये हों उनकी जोड़देवे (यह मध्यम मासगण
 कहाजाताहै.) इसको दो जगहपर स्थापन करे. एक जगह
 चक्रको द्विगुणित करके उसमें जोड़ दे और फिर दशयुक्त
 करे, फिर उसमें ३३ का भाग देनेसे जो फल मिले वह अ-
 धिकमास होतेहैं. इनको दूसरी जगहपर स्थापन किएहुए
 मध्यममासगणमें युक्त करनेसे महीनोंका समूह होताहै.

इस मासोंके समूहको ३० से गुणा करे और गुणनफलमें शुक्रपक्षकी प्रतिपदासे इष्टकालतक जितनी गतातिथि हों उन्हे युक्तकर चक्रका छठा भाग युक्त करे (यह मध्यम अहर्गण होताहै.) फिर इस मध्यम अहर्गणको दोजगह स्थापित करे, इसमें एकजगह ६४ का भाग देनेसे क्षयदिन मिलतेहैं, उनको दूसरीजगह स्थापित कियेहुए मध्यम अहर्गणमें घटानेसे स्पष्ट अहर्गण अर्थात् सावनदिनोंका समूह स्पष्ट होताहै. चक्रको पांचगुणा करके अहर्गणमें जोडकर सातका भाग देनेसे जो शेष बचे वह सोमवारसे आदि लेकर बार होताहै. अर्थात् ० शून्य बचे तो सोमवार १ बचे तो मंगलवार इत्यादि जानै और कदाचित् इस प्रकार इष्टवार नहीं मिले तो उस अहर्गणमें बारकेलिये एक युक्त करनेसे अथवा घटानेसे अहर्गण स्पष्ट होताहै ॥ २ ॥ ३ ॥

मध्यम सूर्य, बुध तथा शुक्र लानेकी रीति लिखतेहैं—

अहर्गणो विश्व १३ गुणस्त्रिंशत्के ९०३
 भक्तः फलानो युगणो लवाद्याः ॥ रविज्ञ
 शुक्राः स्युरथाब्दवृंदाद्विदांग ६४ लब्धेन
 कलादिनाः ॥ ४ ॥

भा०टी०—अहर्गणको १३ से गुणाकरे, उस गुणनफलको ९०३ से भाग देनेसे जो अंशादि फल आवै उसको अह-

गर्णमें घटानेसे जो शेष बचे उसमें करणगताब्दको ६४ से भाग देनेसे जो कलादि फल आवे वह घटा देनेसे अंशादि अहर्गणोत्पन्न सूर्य, बुध और शुक्र होते हैं ॥ ४ ॥

अब मध्यमचन्द्रका साधनप्रकार कहते हैं ।

अन्हां गणः शक्र १४ गुणो विहीनः स्वा
त्यष्टि १७ भागेन लवादिरिन्दुः ॥ अह
र्गणात्खाभ्रसाष्ट ८६०० भक्तादाप्तेन
भागादिफलेन हीनः ॥ ५ ॥

भा०टी०—अहर्गणको १४ से गुणाकरे (इसको अंशादि मानना) फिर इस गुणनफलमें १७ का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसको गुणनफलमें हीन करे. फिर अहर्गणको ८६०० का भाग देकर जो अंशादि फल मिले उसको उस अंशादिमें घटानेसे अंशादि अहर्गणोत्पन्न मध्यम चन्द्र होता है ॥ ५ ॥

अब चन्द्रोच्च तथा राहुका साधनप्रकार कहते हैं ।

गणो द्विधा गोमि ९ रिनाभ्रवेदै ४०१२
लब्धैक्यमंशादि भवेद्विधूच्चम् ॥ द्विधांक
चन्द्रैः १९ खखमै २७०० दिनाघादा
सांशयोगो भवतीन्दुपातः ॥ ६ ॥

भा०टी०—अहर्गण दोजगहपर स्थापनकरे, एकजगह-
पर ९ का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसके अंशा-
दिमें दूसरीजगह अहर्गणको ४०१२ का भाग देनेसे जो
अंशादि फल आवे उसे युक्त करे, यह चंद्रोच्च होताहै-
अहर्गणको दोस्थानपर लिखे, एक स्थानपर १९ का भाग
दे, यह अंशादि फल आवेगा उसमें दूसरे स्थानपर अहर्गणकी
२७०० का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसको
युक्त करनेसे अहर्गणोत्पन्न अंशादि राहु होताहै ॥ ६ ॥

अब मध्यम मंगल तथा बुधकेन्द्रके लानेका प्रकार कहतेहैं ।

रुद्र ११ घ्नो द्युचयो द्विधा शशियमे २१
वेदाब्धिसिद्धेषुभि ५२४४४ भक्तोऽशा
दिफलं द्वयं च सहितं स्यान्मेदिनीन
न्दनः ॥ वेद ४ घ्नो द्युगणः स्वकीयदह
नाब्ध्यं ४३ शेन युक्तो भवेद्भागदि ज्ञ
चलं गणात्क्षितियमेन्द्रा १४२१ सांश
कैर्वर्जितम् ॥ ७ ॥

भा०टी०—अहर्गणको ११ से गुणाकरके, दो जगह स्थापनकरे,
एकजगह २१ का भाग देनेसे जो लब्धि मिले उसमें दूसरी
जगह अहर्गणको ५२४४४ का भाग देनेसे जो अंशादि
लब्धि मिलेगी उसको युक्त करनेसे अहर्गणोत्पन्न मध्यम

मंगल होता है, अहर्गणको ४ से गुणाकर उसमें उस गुण-
नफलमें ४३ का भाग देनेसे जो अंशादि फल आवे उसको
घटा देनेसे अंशादि बुधकेन्द्र होता है ॥ ७ ॥

अब मध्यमगुरुके साधनका प्रकार कहते हैं ।

गणो द्विधा कैं १२ भयमा विधिभिश्च भक्तः
फलांशांतरमिन्द्रमन्त्री ॥

भा०टी०—अहर्गणको दो जगह स्थापित करे, एक जगह पर
१२ का भाग देनेसे जो अंशादि लब्धि आवे उसका और
दूसरी जगह ४२२७ का भाग देनेसे जो अंशादि लब्धि
आवे उसका इन दोनोंका अंतर करनेसे अहर्गणोत्पन्न
मध्यम गुरु होता है ॥

अब शुक्रकेन्द्र तथा मध्यमशनिके साधनका
प्रकार कहते हैं ।

नृपा १६ हतोन्हां निचयो द्विधासो भूवा
णवेदाद्रिभि ७४५१ रभ्रचन्द्रैः १० ॥ ८ ॥
भक्तो लवाद्यं फलयोर्यदैक्यं तज्जायते दै
त्यगुरोश्चलोच्चम् ॥ भक्तः खरामै ३० स्तु
रगांगरामनन्दै ९३६७ द्विधांशादिफले
क्यमार्किः ॥ ९ ॥

भा०टी०—अहर्गणको १६ से गुणा करके उस गुणनफ-

लको दोजगह स्थापितकरे. एकजगहपर ७४५१ का भाग देनेसे जो अंशादि लब्धि आवे उसका और दूसरी जगहपर १० का भाग देनेसे जो अंशादि फल आवे उसका ऐक्य करनेसे शुक्रका अंशादि शीघ्रोच्च होताहै. अहर्गणको दोजगह स्थापित करे. एक जगहपर ३० से भाग देनेसे जो अंशादि फल आवे उसमें दूसरी जगहपर अहर्गणको ९३६७ का भाग देनेसे जो अंशादि फल आवे उसको युक्त करनेसे अहर्गणोत्पन्न मध्यम शनि होताहै ॥ ९ ॥

अब सूर्यादिग्रहोंके ध्रुवांक कहतेहैं.

ध्रुवोऽबर० विधु १ ग्रहोदधि ४९ भवा ११
 रवेर्भादिकः ख० राम ३ रसवार्धयो ४६
 भव ११ समोडुनाथस्य वै ॥ नवा ९ क्षि
 २ शरवार्धयो ४५ थ गदिता विधोस्तुंग
 जःकृतो ४डु २७ दश १० संमितो भप
 तिपातजःस्यात्तथा ॥ १० ॥ क्षितिभुवः
 क्षिति १ तत्व २५ रदा ३२ अथोदधि
 ४ पृषत्क ५ मनु १४ द्विकृता ४२ विदः ॥
 सुरगुरोः ख० रसाश्वि २६ गजेन्दवः १८
 कु १ तिथि १५ तर्ककृते ४६ पुगुणा ३५

भृगोः ॥ ११ ॥ शैलतिथ्य १५ क्षिवेदा
४२ श्रु ध्रुवो राश्यादिकः शनेः ॥ १२ ॥

भा०टी०—अंबर अर्थात् विधु कहिये १ ग्रहोदधि ४९ और
भव ११ यह सूर्यका राश्यादि ध्रुवा है. ख० राम ३ रस-
वार्द्धि ४६ भव ११ यह चन्द्रका ध्रुवा है. नव ९ अक्षि २
शरवार्द्धि ४५ यह चन्द्रमाके मन्दोच्चका ध्रुवा है. कृत ४
उडु २७ दश १० यह राहुका ध्रुवा है. क्षिति १ तत्व २५
रदा ३२ यह मंगलका ध्रुवा है. उदधि ४ पृषत्क ५ मनु
१४ द्विकृता ४२ यह बुधके केन्द्रका ध्रुवा है. ख० र-
साश्वि २६ गजेन्दवः १८ यह बृहस्पतिका ध्रुवा है. कु १
तिथि १५ तर्ककृता ४६ इपुगुण ३५ यह शुक्रकेन्द्रका
ध्रुवा है. शैल ७ तिथि १५ अक्षिवेदा ४२ यह शनिका
ध्रुवा है ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

ग्रहोंके ध्रुवांकोका कोष्टक.

ग्रह	सू	च	चंड	रा	भौ	बु के	शु के	श
राशि	०	०	९	४	१	४	०	७
भश	१	३	२	२७	२५	५	२६	१५
कला	४९	४६	४५	१०	३२	१४	१८	४६
विकला	११	११	०	०	०	४२	०	३८

अब सूर्यादिग्रहोंके क्षेपक कहतेहैं ।

रुद्रा ११ विश्वे १३ गरामाः ३६ खजल
निधि ४० मिता भास्करेऽब्जे गिरीशा
११ दिग् १० रामाश्व्ये २३ कवाणा ५१
अथ शर ५ रसयुग्मा २६ भ्रवाणा ५०
स्तदुच्चै ॥ पाते शूल्य ११ श्विनौर ष्यक्ष
५८ कुदहन ३१ मिता भूमिजेऽश्वे ७
न्द्र १४ शैलाक्षा ५७ स्तिथ्यो १५ ज्ञा
शुकेन्द्रेऽश्व्यु २ दधिकर २४ नगा ७ भ्रा
मयो ३० भादिजाःस्युः॥१३॥ क्षेप्या इहै
ते शिव ११ शूलिनो ११ ऽब्धयो ४ दस्रे
पवो ५२ मंत्रिणि शौक्रकेन्द्रके ॥ रामा
३ के १२ चंद्र १ क्ष २७ मिता अथो
शनौ श्रुत्य ४ ष्टदस्राः २८ शरपंच ५५
सायकाः ५ ॥ १४ ॥

भा०टी०—रुद्रा ११ विश्वे १३ अंगरामाः ३६ खजलनिधि
४० यह राश्यादि सूर्यका क्षेपक है. गिरीशाः ११ दिक्
१० रामाश्वि २३ एकवाणाः ५१ यह चन्द्रका क्षेपक है. शर ५
रसयुग्म २६ अभ्रवाणाः ५० यह चंद्रके मन्दोच्चका क्षेपक है.

शूली ११ आश्विनौ २ अष्टाक्ष ५८ कुदहनाः ३१ यह राहु-
का क्षेपक है. अश्व ७ इन्द्र १४ शैलाक्षाः ५७ तिथ्यः १५
यह मंगलका क्षेपक है. आश्वि २ उदाधिकर २४ नग ७ अत्रा-
ग्रयः ३० यह बुधके शीघ्रकेन्द्रका क्षेपक है. शिव ११ शू-
लिनः ११ अत्रयः ४ दस्रेपवः ५२ यह गुरुका क्षेपक है.
रामाः ३ अर्क १२ चन्द्र १ ऋक्ष २७ यह शुक्रके शीघ्रके-
न्द्रका क्षेपक है. श्रुति ४ अष्टदस्राः २८ शरपंच ५५ सा-
यकाः ५ यह शनिका क्षेपक है. ॥ १३ ॥ १४ ॥

ग्रहोंके क्षेपकोंका कोष्टक.

ग्रह	सू.	चं	चउ.	रा.	भौ.	बुके.	गु	शुके.	श.
राशि	११	११	५	११	७	२	११	३	४
अंश	१३	१०	२६	२	१४	२४	११	१२	२८
कला	३६	२३	५०	५८	५७	७	४	१	५५
विकला	४०	५१	०	३१	१५	३०	५२	२७	५

अत्र स्पष्ट मध्यमग्रह बनानेका प्रकार कहते हैं ।
चक्रनिघ्नध्रुवोनस्वक्षेपयुक्तो द्युपिंडजः ॥
खेटश्चाकादये लंकानगर्या मध्यमो भ
वेत् ॥ १५ ॥

भा०टी०—अहर्गणसे ग्रह बनानेकी रीति जो पहले कह-
गये उसके अनुसार अहर्गणसे बनायेहुये ग्रहमें चक्रसे गुणा

कियेहुए ध्रुवको घटावे और जो शेष बचे उसमें अपना क्षे-
पक युक्त करदे, फिर जो अंक हो वह सूर्यके उदयकालमें
लंका नगरीमें स्पष्ट मध्यमग्रह होजाताहै ॥ १५ ॥

इसप्रकार मध्यमग्रहोंका साधन करके अब मध्यम-
ग्रहोंकी दिनगति अर्थात् मध्यमगतिको कहतेहैं ।

नंदाक्षा ५९ भुजगा ८ रवेः शशिगतिः
खांकाद्रयो ७९० क्षामय ३५ स्तुंगस्यां
ग ६ कलाः कुवेद ४१ विकलाः पातस्य
रामा ३ भवाः ११ ॥ माहेयस्य मही
गुणा ३१ रसकरा २६ ज्ञस्येषुसिद्धा २४५
रदाः ३२ पंचे ५ ज्यस्य सितस्य पण्ण
वमिता ९६ अष्टौ ८ शनेर्द्वे २ कले ॥१६॥

भा०टी०—नंद ९ अक्ष ५ अर्थात् ५९ कला और भुजगाः
८ विकला यह सूर्यकी मध्यमगति है. ख ० अंक ९ अट्टि
७ अर्थात् ७९० कला और अक्ष ५ अग्नि ३ अर्थात् ३५
विकला यह चन्द्रकी मध्यमगति है. अग ६ कला और कु
१ वेद ४ अर्थात् ४१ विकला चन्द्रके मन्दोन्नकी गति है.
रामाः ३ कला और भवाः ११ विकला राहुकी मध्यमगति
है. मही १ गुण ३ अर्थात् ३१ कला और रस ६ कर २ अ-

र्थात् २६ विकला यह मंगलकी मध्यमगति है. इपु ५ सि-
द्धाः २४ अर्थात् २४५ कला और रदाः अर्थात् ३२ विक-
ला यह बुधके शीघ्रकेन्द्रकी मध्यमगति है. पंच ५ कला
और ० पूर्ण विकला गुरुकी मध्यम गति है. षट् ६ नवमिता
९ अर्थात् ९६ कला और अष्टौ ८ विकला यह शुक्रके
शीघ्रकेन्द्रकी मध्यमगति है. और शनिकी द्वे २ कला
और ० पूर्ण विकला यह मध्यमगति है ॥ १६ ॥

ग्रहोंकी गतिका कोष्टक.

ग्रह	सु.	व.	चव.	रा	म.	बुके.	शुके	श.	
कला	५९	७९०	६	३	३१	२४०	६	९६	२
विकला	८	३०	४१	११	२६	३२	०	८	०

इति श्रीसिद्धान्तचिन्तामणौ मध्यमग्रहसाधनाधि-
कारःप्रथमः ।

अथ स्पष्टाधिकारः ।

इस स्पष्टाधिकारमें सूर्यचन्द्रके स्पष्ट करना और पंचा-
गानयन (तिथि, नक्षत्र, योग, करण) कहा जाता है, उसमेंभी
पहिले ग्रहोंमें देशान्तरसंस्कार करनेका प्रकार लिखते हैं ॥

रेखा स्वदेशान्तरयोजनघ्नी गतिर्ग्रह
स्याभ्रगजे ८० विभक्ता ॥ लब्धा विलि

साः स्वचरे विधेयाः प्राच्यामृणं पश्चिम
तो धनं ताः ॥ १ ॥

मा०टी०—जिस ग्रामका ग्रह स्पष्ट करना होय उस ग्रामके
और दक्षिणोत्तर मध्यरेखाके मध्यमें जितने योजनका अं-
तर होवे उन योजनोंसे ग्रहकी गतिको गुणाकर उस गुणन-
फलको ८० का भाग देनेसे जो लब्धि आवे वह कला
होतीहै. इन विकलाओंका ग्राम मध्यरेखासे पूर्वभागमें होय
तो पूर्वानीत मध्यमग्रहमें ऋण (हीन करना) संस्कार
करनेसे और ग्राम मध्यरेखासे पश्चिमभागमें होय तो धन
(युक्त) संस्कार करनेसे स्वदेशीय मध्यम ग्रह होताहै ॥ १ ॥

अब भुजकोटिसाधनप्रकार लिखतेहैं ।

त्र्यूनं भुजः स्यात्त्र्यधिकेन हीनं भार्धं च
भार्धादधिकं विभार्धम् ॥ नवाधिको नो
नितमर्कभं च भवेच्च कोटिसिगृहं भुजो
नम् ॥ २ ॥

मा०टी०—केन्द्र अथवा ग्रह तीन राशिसे कम हो तो वही
भुज होताहै, और जो तीनराशिसे अधिक होतो ६ राशिमें
घटाकर जो शेष रहे वह भुज होताहै. और ६ से नव पर्यन्त हो तो ९ में घटावे और नवसे अधिक होतो १२
राशिमें घटावे जो शेष रहे वह भुज होताहै. ३ राशिमें
भुजको घटावे तो कोटि होतीहै ॥ २ ॥

अब ज्याखंडक और लघुज्यादि साधनप्रकार कहते हैं ।
 रूपाश्विनौ २१ विंशति २० रंक चन्द्रा
 १९ अत्यष्टि-१७ तिथय १५ र्क १२ नवे
 ९ पु ५ दस्राः २ ॥ ज्याखंडकान्यंशमि
 तेर्दशाप्तं स्युर्भक्तखंडान्यथ भोग्यनि
 द्नाः - ॥ ३ ॥ शेषांशकाः खेन्दु १० हृता
 यदाप्तं तद्भुक्तखंडैक्ययुतं भवेज्या ॥

भा०टी०—जिस ग्रहकी ज्या बनानी हो उस ग्रहके अंशोंमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उस अंकके समान निम्नलिखित अंकोंमेंसे एक अंक ग्रहण करे, और इन नवों अंकोंमें जो अंक हो उसको गत अंक मानकर उससे अगले अंकको एण्य माने. फिर गत और एण्य इन दोनों अंकोंके अंतरसे शेषको गुणा करे, फिर इस गुणनफलमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उसको गत अंकोंका ऐक्य करके जो संख्या आवे उसमें युक्त करे, यह ज्या होती है. अंक निम्नलिखित कोष्टकमें देखो ॥ ३ ॥

ज्याखंडोंका कोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९
२१	२०	१९	१७	१५	१२	९	५	२

अब उदयान्तरसंस्कारका साधनप्रकार कहतेहैं ।

अथायनांशाः करणाब्दलिप्तायुक्ताः कृ
ती २२ नन्दयुगा ४९ ढ्यभानोः ॥ ४ ॥
द्विघ्नस्य दोर्ज्या शर ५ हद्विलिप्ता भा
नोर्विधोःकक्षि २१ हताः कलास्ताः ॥
स्वर्णं तु युगमौजपदे स्थितेऽर्के क्रमेण क
र्मत्युदयान्तराख्यम् ॥ ५ ॥

भा०टी०—यह करणग्रंथ जिस शाकेमें (१८१४) बना-
है उससे इष्ट शककालपर्यंत जितने वर्ष व्यतीत होगये हों
उतनी कला २२।४९ में युक्त करनेसे इष्ट अयनांश होतेहैं
इन अयनांशोंको मध्यमसूर्यमें जोडदे, फिर इस जोडको
द्विगुणित करके जो राश्यादि होय उसका भुज करके उस
भुजसे प्रथम कही पद्धतिसे ज्यासाधन करके उस ज्याको
५ का भाग देनेसे जो लब्धि आवे वह सूर्यकी विकला हो-
तीहैं, और उसी ज्याको २१ का भाग देनेसे जो लब्धि
आवे वह चन्द्रकी कला होतीहैं. सायनसूर्य समपदमें होती
इन विकला और कलाओंकी सूर्यमें और चन्द्रमामें धन
(युक्त) करे (विकला सूर्यमें और कला चन्द्रमामें) और
सायनसूर्य विषमपदमें होय तो इन विकला और कला-

ओंको सूर्यमें तथा चन्द्रैमामें ऋण (घटादे) करे. इसको उदयान्तरसंस्कार कहतेहैं. पद आगे कहेंगे ॥ ५ ॥

अब मन्दकेन्द्रके उपयुक्त ग्रहोंके मन्दोच्च कहतेहैं ।

मन्दोच्चमर्कस्य गजाद्रि ७८ भागा
भौमादिकानां सदलाष्टसूर्याः १२८ ।
३० ॥ तत्वाश्विनः २२५ सार्धयमाद्रिच
न्द्राः १७२।३० कष्टौ ८१ मतंगान्निय
माः २३८ क्रमेण ॥ ६ ॥

भा०टी०—सूर्यका गज ८ अद्रि ७ अर्थात् ७८ अंश अर्थात् २ राशि १८ अंश मन्दोच्च है. मंगलका सदल कहिये अर्ध अंशसहित अष्ट ८ सूर्य १२ ऐसे १२८ अंश अर्थात् ४ राशि ८ अंश ३० कला मन्दोच्च होताहै. तत्व २५ अर्धा २ ऐसे २२५ अंश अर्थात् ७ राशि और १५ अंश बुधका मन्दोच्च है. सार्ध कहिये अर्धअंशसहित यम २ अद्रि ७ चन्द्र १ ऐसे १७२ अंश अर्थात् ५ राशि २२ अंश और ३० कला गुरुका मन्दोच्च है. कु १ अष्टौ ८ ऐसे ८१ अंश अर्थात् २ राशि २१ अंश शुक्रका मन्दोच्च है. और मतंग ८ अग्नि ३ यम २ ऐसे २३८ अंश अर्थात् ७ राशि और २८ अंश शनिका मन्दोच्च होताहै ॥ ६ ॥

ग्रहोंके मन्दोच्चका कोष्टक.

ग्र	सु	म	बु	गु	शु	श
राशि	२	४	७	९	२	७
अंश	१८	८	१९	२२	२१	२८
कला	०	३०	०	३०	०	०
मिक्ला	०	०	०	०	०	०

अब मन्दकेन्द्र शीघ्रकेन्द्र पद और धनऋणसंज्ञा कहतेहैं ।

ग्रहोनमुच्चं मृदु चंचलं च केन्द्रे भवेतां
मृदुचञ्चलाख्ये ॥ त्रिभिस्त्रिभिर्भेः पदमत्र
कल्प्यं स्वर्णं फलं मेपतुलादिकेन्द्रे ॥ ७ ॥

भा०टी०—पूर्वोक्तप्रकारसे आयाहुवा ग्रह मन्दोच्चमें और शीघ्रोच्चमें घटानेसे मन्दकेन्द्र और शीघ्रकेन्द्र होताहै. तीन राशिओंका एक १ पद होताहै, १२ राशिओंके ४ पद होतेहैं. वहांपर प्रथम और तीसरा यह विषमपद कहलातेहैं. और दूसरा तथा चौथा यह समपद कहलातेहैं. मन्द अथवा शीघ्रकेन्द्र मेपादि छः राशिमें हो तौ फल मध्यम और मन्दस्पष्ट ग्रहमें धन करे, और केन्द्र तुलादि छः राशिमें होय तौ फल मध्यम और मन्दस्पष्ट ग्रहमें ऋण करे ॥ ७ ॥

अब ग्रहोंके मन्दफल साधनेका प्रकार कहतेहैं ।

सूर्यादिकानां मृदुकेन्द्रदोज्या दिग्घ्नी १०
 विभाज्याथ खपंचबाणैः ५५० ॥ नागा
 मिदस्रै २३८ गिरिपूर्णचन्द्रै १०७ वर्स्व
 कभूमि १९८ वर्सुनेत्रनेत्रैः २२८ ॥ ८ ॥
 युगाष्टशैलै ७८४ मुनिपंचचन्द्रैः १५७
 फलं लवाः केन्द्रवशाद्धनर्णम् ॥ कार्यं
 ग्रहे सूर्यविधू स्फुटौ स्तो मन्दस्फुटा
 ख्या इतरे स्युरेवम् ॥ ९ ॥

भा०टी०—सूर्यादि ग्रहोंके जो मृदुकेन्द्र आये हों उनका भुज करके उस भुजसे पूर्वोक्तप्रकारसे ज्या साधके उस ज्याको १० से गुणा करे. फिर वह ज्या सूर्यसंबंधी हो तौ ख० पंच ५ बाण ५ ऐसा ५५० का, चन्द्रसंबंधी हो तौ नाग ८ अग्नि ३ दस्र २ ऐसे २३८ का, मंगलसंबंधी हो तौ गिरि ७ पूर्ण ० चंद्र १ ऐसे १०७ का, बुधसंबंधी होतौ वसु ८ अंक ९ भू १ ऐसे १९८ का, गुरुसंबंधी होतौ वसु ८ नेत्र २ नेत्र २ ऐसे २२८ का, शुकसंबंधी होतौ युग ४ अष्ट ८ शैल ७ ऐसे ७८४ का, और शनि-संबंधी होतौ मुनि ७ पंच ५ चन्द्र १ ऐसे १५७ का भाग देनेसे जो अंशादि फल लव्ये हो उसको मृदुकेन्द्र भेपादि छः

राशिमें होतौ मध्यमग्रहमें धन और मृदुकेन्द्र तुलादि छः
राशिमें होतौ मध्यम ग्रहमें ऋण करे, यह संस्कार करनेसे
सूर्य और चंद्र स्पष्ट होतेहैं, और भौमादि पांच ग्रह मंद-
स्पष्ट होतेहैं ॥ ९ ॥

अब चन्द्रमामें शुजांतरफलसंस्कार और ग्रहांकी गतिके
मन्दफलका साधनप्रकार कहतेहैं ।

भानोःफलं भौ २७ विहतं च चन्द्रे मध्ये
विधेयं रविवद्धनर्णम् ॥ स्वभोग्यखंडं
नव ९ हृत्खरांशोर्विश्वा १३ हतं वेद ४
हतं हिमांशोः ॥ १० ॥ द्वि २ घ्नं नगा ७
सं कुजसौम्ययोश्च खाक्षै ५० रिनेः १२
खार्क १२० मितैश्च भक्तम् ॥ जीवादि
कानां च गतेः फलं तत्स्वर्णं क्रमात्कर्क
मृगादिकेन्द्रे ॥ ११ ॥

भा०टी०—पूर्वोक्तश्लोकमें कहेप्रकारसे सूर्यकी ज्याको
५५० का भाग देकर जो अंशादि फल लब्ध हुवाहो
उसको २७ का भाग देनेसे जो अंशादि फल लब्ध हो
उसको मध्यमचन्द्रमामें सूर्यका फल सूर्यमें धन किया हीतो
धन करे और सूर्यका फल सूर्यमें ऋण किया हीता चन्द्रमामें

ऋण करे तब चन्द्र स्पष्ट होता है. दूसरे ग्रहोंमें अंतर अल्प होनेसे यह संस्कार उनके लिये नहीं कहा. जिस ग्रहके गतिफलका साधन करनाहो उसके भुजकी ज्या करते समय जो भोग्यखंड आयाहो वह सूर्यसंबंधी होतो ९ नवका भाग देनेसे, चन्द्रसंबंधी होतो १३ से गुणाकर ४ का भाग देनेसे, मंगल और बुधसंबंधी होतौ २ दोसे गुणाकर ७ का भाग देनेसे, गुरुसंबंधी होतौ ५० का भाग देनेसे, शुक्रसंबंधी होतौ १२ का भाग देनेसे और शनिसंबंधी होतौ १२० का भाग देनेसे जो कलादि फल लब्ध हो वह अपनी २ मध्यमगतिमें मन्दकेन्द्र कर्कादि छः राशिमें होतौ धन और मकरादि छः राशिमें होतौ ऋण करे. ऐसा करनेसे रवि और चन्द्रकी गति स्पष्ट होती है, और भौमादि पांच ग्रहोंकी गति मन्दस्पष्ट होती है.

अब पलभा, चरखंड और चर बनानेकी रीति तथा चरसंस्कार कहते हैं ।

अयनलवदिनैः प्राङ् मेपसंक्रांतिकाला
 द्रवति दिवसमध्ये या प्रभाक्षप्रभा सा ॥
 दश १० गज ८ दश १० निघ्नी साक्षभां
 त्या त्रि ३ भक्ता प्रतिगृहचरखंडान्याय
 नांशाद्व्यभानोः ॥१२॥ भुजगृहमितयो

गो भोग्यखंडांशघातात्खगुण ३० लव
युगस्वं स्वं चरं गोलयोः स्यात् ॥ चरपल
गतिघातः पष्ठिभक्तो विलिप्ताः स्वमृण
मुदयकाले व्यस्तमस्तग्रहेषु ॥ १३ ॥

भा०टी०—मेषसंक्रांतिके पहिले अयनांशतुल्य दिनोंसे जिसदिन दिवसके मध्यान्हकालमें द्वादशांगुल शंकुकी छाया जितने अंगुल पडेगी वह पलमा होती है. अर्थात् सायनसूर्य जिसदिन मेपराशिमें राशि, अंश, कला, विकलासे शून्य होय उस दिन मध्यान्हकालके समय एकसी भूमिपर बारह अंगुलका शंकु खडा करे, उसके खडा करनेसे जो छाया पडे वह पलमा होती है, उस पलमाको तीन जगह धरे, और एकजगह १० से, दूसरी जगह ८ से और तीसरी जगह १० से गुणाकरे. फिर अंतकी १० से गुणित पलमामें ३ का भाग देनेसे ३ चरखंडे होते हैं.

मंदस्पष्टसूर्यमें अयनांश युक्त करके उसका भुज करे, फिर उस भुजमें राशिकी जगह शून्य होतौ अंशादिकी प्रथमचरखंडेसे गुणा करे, और जो भुजमें एकराशि होतौ अंशादिकी दूसरे चरखंडेसे गुणा करे, जो भुजमें दो राशि हों तौ अंशादिकी तीसरे चरखंडेसे गुणा करे. फिर जो गुणन फल मिले उसमें ३० का भाग दे, जो भाग लब्ध हो

उसमें जिस चरखंडेसे अंशादिकी गुणा क्रियांथा. उससे पहिले अर्थात् गत चरखंडेको जोडदेनेसे पलात्मक चर होताहै. वह चर सायनसूर्य मेपादि छः राशिमें होतौ घटावे और सायनसूर्य तुलादि छः राशिमें होय तौ युक्त करे. अर्थात् सूर्यके दक्षिणोत्तर गोलके समान चरको धन ऋण जाने. चरपलोंसे ग्रहकी गतिकी गुणा करे, फिर उस गुणन-फलको ६० का भाग देनेसे जो लब्ध फल आवे वह विकला होतीहैं. इन विकलाओंका उदयकालसमयके ग्रहमें चरके समान धन ऋण संस्कार करनेसे ग्रह स्पष्ट होताहै. और सायंकालके समयका अर्थात् अस्तकालका होतौ चर धन होतौ ग्रहमें इन विकलाओंको घटावे, और चर ऋण होतौ ग्रहमें विकलाओंको युक्त करे तब ग्रह स्पष्ट होताहै. ग्रह मध्यान्हकालका अथवा मध्यरात्रिके समयका किया हो तौ इस चरपलका संस्कार करनेकी जरूर नहींहै ॥ १२ ॥ १३ ॥

अब तिथि, करण, नक्षत्र और योगसाधन करनेका प्रकार कहतेहैं ।

विरविचन्द्रलवा रवि १२ पङ् ६ हताः
 पृथगितास्थितयः करणानि च ॥ कुर
 हितानि ववाच्छकुनिप्रभृत्यसितभूत
 दलादिचतुष्टयम् ॥ १४ ॥ विधुकलाः

सरवीन्दुकलाहताः स्वखगजै ८००
 श्र्व भयोगामिती क्रमात् ॥ अथ हताः
 स्वगतैष्यविलिप्तिकाः स्वगतिभिश्चग
 तागतनाडिकाः ॥ १५ ॥

मा०टी०—चन्द्रमामें सूर्यको घटानेसे जो राश्यादि फल आवे उसके अंश बनावे. फिर उसमें १२ का भाग देनेसे जो फल मिले वह गततिथि होतीहैं, और जो शेष बचे वह मिली तिथिका भुक्त है. इस शेषको १२ में घटानेसे तिथिका भोग्य होताहै. फिर गत और भोग्यतिथियोंकी कलाओंकी विकला बनाके फिर गत और भोग्य विकलाओंको अलग२ धरके ६० से गुणा करे, जो गुणनफल मिले उसमें सूर्य और चन्द्रमाकी गतिके अंतरकी विकला करके उनका गतकी विकलाओंमें भाग देनेसे तिथिकी भुक्त हुई घड़ी आदि और भोग्यकी विकलाओंमें भाग देनेसे भोग्य घड़ी पलादि होतेहैं.

करणसाधन—चन्द्रमामें सूर्यको घटानेसे जो राशीआदि शेष बचे उसके अंश बनाले, फिर उन अंशोंमें ६ का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह गतकरण होतेहैं, उस लब्धफलमें १ घटानेसे जो शेष बचे वह शुकृपक्षकी प्रतिपदाके उत्तरार्धसे बवादि करण होतेहैं, तथा कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके उत्तरार्धसे शकुनिप्रभृति करण होतेहैं. भुक्त और भोग्यतिथिके घड़ीपलोंका योग करे, फिर उसका आधा

करनेसे घड़ी आदि करणका मान होताहै, फिर उसमें गत-
तिथिके मानको घटानेसे करणकी वर्तमान घड़ी हांतीहैं.

नक्षत्रका साधनप्रकार—ग्रहकी राशि आदिकी कला
बनावै, फिर उनमें ८०० का भाग देनेसे जो फल मिले
वह गतनक्षत्र हैं, और जो शेष बचा हो वह वर्तमानन-
क्षत्रका भुक्तभाग है, उसको हर (८००) में घटावे तो शेष
भोग्य भाग रहताहै. फिर भुक्तभागको ६० से गुणाकर
विकला करे. फिर उनको ६० से गुणाकर प्रतिविकला करे,
और ग्रहके गतिकी विकलाओंका भाग उनमें दे तो वर्तमान
नक्षत्रके भुक्त घड़ी, पल मिलेंगे. और भोग्यकी विकलाओंकी
प्रतिविकला करके उनको ग्रह गतिकी विकलाओंका भाग
देनेसे भोग्य घड़ी, पल मिलतेहैं.

योगसाधनप्रकार—सूर्य चन्द्रमाके योगकी कलाओंको
८०० का भाग देनेसे जो लब्ध भाग आवे वह गतयोग
मिलताहै. और जो शेष बचे वह वर्तमानयोगका भुक्तभाग
हांताहै. उसको हर (८००) में घटानेसे भोग्यभाग हो-
ताहै. फिर भुक्त और भोग्यको ६० से गुणा करके विकला
बनाले. फिर उनमें चन्द्रसूर्यकी गतियोंके योगका भाग दे-
नेसे वर्तमानयोगकी भुक्त और भोग्य घड़ी, पल होतेहैं ॥ १५ ॥

इति श्रीसिद्धान्तचिन्तामणौ ग्रहस्पष्टाधि-
कारो द्वितीयः ।

अथ तृतीयाधिकारः ।

अब भौमादि पांच ग्रहोंका स्पष्टाधिकार कहतेहैं,
तहां प्रथम भौमादिकोंके पराख्य कहतेहैं-

कुंकुंजरा ८१ वेदकृता ४४ स्त्रिदस्राः २३
सप्ताहयो ८७ विश्व १३ मिताः परा
ख्याः॥ भौमादिकानामथ मध्यमोऽर्कः
शीघ्रोच्चमज्यारशनैश्वराणाम् ॥ १ ॥

भा०टी०—कु १ कुंजर ८ अर्थात् ८१, वेद ४ कृताः ४
अर्थात् ४४, त्रि ३ दस्र २ अर्थात् २३, सप्त ७ अहि
८ अर्थात् ८७ विश्व १३, ये क्रमसे भौमादिग्रहोंके पराख्य
होतेहैं. बुध और शुक्रके शीघ्रोच्च मध्यमाधिकारमें कहेहैं,
मंगल, गुरु और शनैश्वरका मध्यमसूर्यही शीघ्रोच्च है ॥ १ ॥

अब मंगलके मन्दोच्च और पराख्यका स्पष्टीकरण कहतेहैं

भौमाशुकेन्द्रे पदयातगम्यस्वलपस्य
लिप्ताः खखवेद ४०० भक्ताः ॥ ल
ब्धांशकैः कर्कमृगादिकेन्द्रे हीनान्वि
तं स्पष्टमसृङ्मृदूच्चम् ॥ २ ॥ लब्धांशका
नां त्रि ३ लवेन हीनः स्पष्टः परः स्या
त्क्षितिनन्दनस्य ॥ ३ ॥

भा०टी०—तीन २ राशिओंका एक १ पद होताहै, इसरी-
तिसे मंगलके शीघ्रोच्चका जो पद हो उसका जो यात (गत)
भाग हो उसको ३ राशिमें घटानेसे गम्यभाग होताहै. इन
गत गम्य दोनोंमें जो अल्प हो उसके राशिअंशोंकी कला
बनालेवे, फिर उनको ४०० का भाग देकर जो अंशादि
फल लब्ध हो वह मंगलका शीघ्रकेन्द्र कर्कादि छः राशिमें
हो तौ मंगलके मन्दोच्चमें घटावे, और शीघ्रकेन्द्र मकरादि
छः राशिमें हो तौ मन्दोच्चमें युक्त करे, तब मंगलका म-
न्दोच्च स्पष्ट होताहै. शीघ्रोच्चके पदके गतगम्यभागमें जो
स्वल्प है उसकी कलाओको ४०० का भाग देकर जो अं-
शादि फल लब्ध हुआहो उसमें ३ का भाग देकर जो
फल लब्ध हो उसको मंगलके पराख्यमें घटावे तब मंगलका
पराख्य स्पष्ट होताहै ॥ २ ॥ ३ ॥

अत्र धनुःसाधनप्रकार कहतेहैं ।

विशोध्य खंडानि दश १० त्रशोपादशुद्ध
लब्धं धनुरंशकाद्यम् ॥ विशुद्धसंख्याह
तदि १० ग्युतं स्याद्द्वयंस्तैर्दलैर्व्यस्त
धनुर्ज्यके स्तः ॥ ४ ॥

भा०टी०—जिस ग्रहका धनु निकालना हो उस ग्रहकी ज्या
करके फिर ज्याके प्रथमखंडसे आरंभ करके जितने खंड

शोधे जाय उतने शोधके जो शेष बचे उसको १० गुणा करके जो गुणनफल हो उसको अशुद्धखण्डका भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह शुद्ध ज्या खंडोको एकत्र मिलाकर उनके अंकोंकी जो संख्या हो उससे १० को गुणाकर जो गुणनफल आवे उसमें युक्त करे तब वह अंशादि धनु होता है. व्यस्तखंडोसे ज्या और धनु व्यस्त होते हैं ॥ ४ ॥

अब भौमादिग्रहोंका शीघ्र फललानेका प्रकार कहते हैं ।

कोटिज्या चलकेन्द्रजा परगुणा द्विघ्नी
तयो नान्विता केन्द्रे कर्कमृगादिके पर
कृतिः स्वाभ्राब्धिश्चै १४४०० युता ॥
तन्मूलं श्रवणः परेण गुणिता दोज्याथ
कर्णोद्धृता तच्चापं चपलं फलं धनमृणं
मन्दस्फुटे स्यात्स्फुटः ॥ ५ ॥

भा०टी०—मन्दस्पष्टग्रहको अपने २ शीघ्रोच्चमे घटादेवे वह शीघ्रकेन्द्र होता है, उस शीघ्रकेन्द्रका भुज करके फिर भुजसे कोटि बनालेवे, फिर उस कोटिसे ज्या बनालेवे, फिर उस ज्याको अपने पराख्यसे गुणाकरके जो गुणनफल आवे उसको फिर दो २ से गुणा करे, जो गुणनफल आवे उसको पराख्यका वर्ग करके उस वर्गको १४४०० में युक्त

करके जो फल आवे उसमें शीघ्रकेन्द्र कर्कादि छः राशिमें होय तौ घटादेनेसे और शीघ्रकेन्द्र मकरादि छः राशिमें हो तौ युक्त करनेसे जो शेष वचे उसका वर्गमूल निकाले, जो वर्गमूल आवे वह कर्ण होता है.

कर्णका भुज करके उससे ज्यासाधन करे, फिर उस ज्याको पराख्यसे गुणा करे, फिर उस गुणनफलको कर्णसे भाग देनेसे जो अंशादि फल लब्ध हो उससे धनुसाधन करे, जो धनु आवे वह शीघ्र फल होता है. यह शीघ्रफल शीघ्रकेन्द्र मेपादि छः राशिमें होतौ मन्दस्पष्टग्रहमे धन (युक्त) करे और केन्द्र तुलादि छः राशिमें होतौ ग्रहमे ऋण (घटादेवे) करे, तब ग्रह शीघ्रस्पष्ट होता है ॥ ५ ॥

अब शीघ्रस्पष्टसे स्पष्टग्रह बनानेका प्रकार तथा मंगलमें विशेषप्रकार कहते हैं ।

तदुत्थमांदेन चलेन मध्यश्वेतसंस्कृतः
स्पष्टतरस्तदा स्यात् ॥ दलीकृताभ्यां प्र
थमं फलाभ्यां ततोऽखिलाभ्यामसकृ
त्कुजस्तु ॥ ६ ॥

भा०टी०—जो ग्रह शीघ्रस्पष्ट हुवा उससे जो मन्दफल आवे उसका मध्यमग्रहमें संस्कार करनेसे ग्रह स्पष्ट होता है. तात्पर्य इसका यह है कि प्रथम जो ग्रह शीघ्रस्पष्ट हुवा हो

उसको मध्यम है ऐसा समझके उससे प्रथम कहे पद्धतिसे मन्द फल साधनकर फिर उस मन्दफलका उस मध्यम समझेहुवे ग्रहमें केन्द्रको देखकर धन ऋण संस्कार करनेसे ग्रह स्पष्ट होताहै. मंगल स्पष्ट करना हो तब तौ मन्दफल तथा शीघ्रफलका अर्ध करके उसका मध्यममंगलमें संस्कार करे और संस्कार करेहुवे उस मंगलको मध्यम समझके उससे पूर्वोक्तप्रकारसे मन्दफलका साधन करे, जो मन्दफल आवे उसका मध्यम समझेहुवे उस मंगलमें संस्कार करे तब मन्दस्पष्ट होताहै. फिर उस मन्दस्पष्ट मंगलसे प्रथम कहे पद्धतिसे शीघ्रफल साधन करे. जो फल आवे उसका मन्दस्पष्ट मंगलमें संस्कार करे. इसरीतिसे असकृत् (बारंबार) संस्कार करे तब मंगल स्पष्ट होताहै. दूसरे ग्रहोंमें प्रायः असकृत् संस्कार करनेकी जरुरात नहींहै. वह बहुतकरके प्रथम संस्कारसेही स्पष्ट होतेहैं ॥-६ ॥

अब गति स्पष्ट करनेका प्रकार कहतेहैं ।

चलोच्चभुक्तेस्तु मृदुस्फुटाख्या संशोध
 येत्सा चलकेन्द्रभुक्तिः ॥ द्राक्केन्द्रभुक्ति
 गुणिताशुचापभोग्यज्यया खाब्धि ४०
 गुणा च भक्ता ॥ ७ ॥ सप्त ७ पक्षकर्णेन चलोच्च
 भुक्तेः शोध्यावशेषं स्फुटखेटभुक्तिः ॥

यदान शुद्धा विपरीतशोध्या शेषं भवेद्
क्रगतिस्तदानीम् ॥ ८ ॥

भा०टी०—ग्रहकी मध्यमगतिमें पूर्वोक्तप्रकारसे गतिफलका संस्कार करनेसे जो मन्दस्पष्ट गति आवे उसको शीघ्रोच्चकी गतिमें घटानेसे जो शेष बचे वह शीघ्रकेन्द्रकी गति होती है। शीघ्रकेन्द्रकी गतिको शीघ्रकर्णकेलिये लाये-हुवे धनुके अशुद्धखण्डसे गुणा करके जो गुणन फल आवे उसको फिर ४० से गुणा करे, जो गुणनफल आवे उसमें कर्णको ७ से गुणाकर जो गुणन फल आवे उसका भाग देकर जो कलादि भाग आवे उसको शीघ्रोच्चकी गतिमें घटादेवे, जो शेष बचे वह स्पष्टगति होती है। जब ये आयाहुवा भाग शीघ्रोच्चकी गतिसे अधिक होनेसे उसमें नहीं घटाया जाय तब शीघ्रोच्चकी गति इस भागसे शोवे जो शेष रहे वह ग्रहकी वक्रगति होती है। तब ग्रह वकी है ऐसा जाने ॥ ७ ॥ ८ ॥

अब भौमादि पांच ग्रहोंके वकी होनेके
शीघ्रकेन्द्रके अंशोंको कहते हैं ।

द्राक्षेन्द्रभागैस्त्रिनृपैः १६३ शरेन्द्रै १४५
स्तत्वेन्दुभिः १२५ सप्तनृपै १६७ स्त्रिरु
द्रैः ११३ ॥ स्याद्वक्रता भूमिसुतादिका
नामवक्रता तद्रहितैश्च भांशैः ॥ ९ ॥

भा०टी०—जिसदिन मंगलके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश एकसौ तरेसठ १६३ होजातेहैं उस दिन मंगल वक्रो होताहै, अर्थात् उसकी चाल उलटी होतीहै. जिसदिन बुधके शीघ्रकेन्द्रके अंश १४५ होतेहैं उसदिन बुध वक्रो होताहै. जिसदिन गुरुके शीघ्रकेन्द्रके अंश १२५ होजातेहैं उसदिन गुरु वक्रो होताहै. शुक्रके शीघ्रकेन्द्रके अंश जिसदिन १६७ होतेहैं उसदिन शुक्र वक्रो होताहै, और जिसदिन शनिके शीघ्रकेन्द्रके अंश ११३ होजातेहैं उसदिन शनि वक्रो होताहै. इन शीघ्रकेन्द्रके अंशोंको भगणोंके अंशोंमें अर्थात् वारह राशियोंके ३६० अंशोंमें घटादेनेसे जं। स्थिर शीघ्रकेन्द्रांश बचें उतने अंशोंसे मंगलआदि पांचों ग्रह मार्गी होतेहैं. भौमादिके स्थिरशीघ्रकेन्द्रांश ३६० में घटानेसे ये अंश हुए अर्थात् मंगलके १९७ बुधके २५५ गुरुके २३५ शुक्रके १९३ शनिके २४७ ॥ ९ ॥

अब मंगल गुरु और शनि इन्होंके उदय
और अस्तके अंशोंको कहतेहैं ।

प्राच्यामुदेति क्षितिजोऽष्टदस्रैः २८ श
कै १४ गुरुः सप्तकु १७ भिश्च मन्दः ॥
स्वस्वोदयांशोनितचक्रभागैस्त्रयो ब्रज
न्त्यस्तमयं प्रतीच्याम् ॥ १० ॥

भा०टी०—मंगलका स्थिरशीघ्रकेन्द्रके २८ अंशोंपर पूर्व-
दिशामें उदय होताहै. बृहस्पतिका स्थिरशीघ्रकेन्द्रके १४
अंशोंपर पूर्वदिशामें उदय होताहै, और शनिका स्थिरशी-
घ्रकेन्द्रके १७ अंशोंपर पूर्वदिशामें उदय होताहै. फिर
अंपने २ उदयके अंशोंको ३६० अंशोंमें घटानेसे ३३२
३४६।३४३ जो स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश रहे, अर्थात् मंग-
लके ३३२ बृहस्पतिके ३४६ और शनिके ३४३ इनके
समान अंशोंसे मंगल, बृहस्पति और शनि इन्होंका क्रमसे
पश्चिमदिशामें अस्त होताहै ॥ १० ॥

अब बुध शुक्रके उदय और अस्तके अंशोंको कहतेहैं ।

खाक्षै ५० जिने २४ ज्ञसितयोरुदयः
प्रतीच्यामस्तश्च पंचतिथिभि १५५ मु
निसप्तभूमिः १७७ ॥ प्रागुद्गमः शरनखै
२०५ स्त्रिवृति १८३ प्रमाणै रस्तश्च तत्र
दशवन्दिभि ३१० रङ्गदेवैः ३३६ ॥११॥

भा०टी०—जिसदिन बुधके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश ५०
होजातेहैं उसदिन पश्चिमदिशामें बुधका उदय होताहै. जिस-
दिन शुक्रके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश २४ होजातेहैं उसदिन
शुक्रका पश्चिमदिशामें उदय होताहै, और जिसदिन बुधके
स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश १५५ होजातेहैं उसदिन बुधका

पश्चिमदिशामें अस्त होताहै. जिसदिन शुक्रके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश १७७ होजातेहैं उसदिन शुक्रका पश्चिमदिशामें अस्त होताहै. जिसदिन बुधके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके २०५ अंश होजातेहै उसदिन बुधका पूर्वदिशामें उदय होताहै. जिसदिन शुक्रके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके १८३ अंश होजातेहैं उसदिन शुक्रका पूर्वदिशामें उदय होताहै और जिस दिन बुधके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके ३१० अंश होजातेहै उसदिन बुधका पूर्वदिशामें अस्त होताहै, और जिसदिन शुक्रके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके ३३६ अंश होजातेहैं उसदिन शुक्रका पूर्वदिशामें अस्त होताहै ॥ ११ ॥

अब मौमादिग्रहोंके वक्र, मार्गी, उदय और अस्तके दिनादि लानेका प्रकार कहतेहैं ।

अवक्रवक्रास्तमयोदयोक्तभागाधिको
नाः कलिका विभक्ताः ॥ द्राक्केन्द्रमु
त्तयाप्तदिनैर्गतैष्यैरवक्रवक्रास्तमयोद
याः स्युः ॥ १२ ॥

भा०टी०—मौमादिग्रहोंके मार्गी होनेके, वक्री होनेके तथा अस्त और उदयके जो अंश पहले दोश्लोकोंमें कहे उन अंशोंसे अधिक अथवा अल्प जो ग्रहोंके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश हो उनका विकला बनालेवे, फिर उन विकलाओंको

ग्रहके शीघ्रकेन्द्रकी गतिसे भागकर जो दिनादि लब्धि आवै उतनेही गत अथवा एष्य दिनोंसे ग्रह मार्गी अथवा वक्री होगा, तथा अस्तंगत अथवा उदित होगा ॥ १२ ॥

इति पंचतारास्पष्टाधिकारस्त्वृतीयः ।

अथ चतुर्थाधिकारः ।

अब लग्नादि साधन करनेका प्रकार कहतेहैं ।

तहां प्रथम लंकानगरीमें तथा स्वदेशमें मेषादिराशियोंके उदयमान कहतेहैं ।

लंकोदया नागतुरङ्गदस्त्रा २७८ गौंका
श्विनो २९९ रामरदा ३२३ विनाड्यः ॥
क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखंडकैः स्वैः क्रमो
त्क्रमस्थैश्च विहीनयुक्ताः ॥ १ ॥ मेषा
दिपण्णामुदयाः स्वदेशे तुलादितोऽ
मी च षडुत्क्रमस्थाः ॥

भा०टी०—पहिले लंकानगरीके उदयमें मेषादिराशियोंके पलादि मान कहतेहैं, मेषके २७८ वृषके २९९ और मियुनके ३२३ पल, इन्होंको विपरीतक्रमसे स्थापन करनेसे कर्कसे कन्याराशितक तीन राशियोंके उदयके मान होतेहैं, और इससे विपरीत क्रम लेनेसे तुलासे मीनतकके छः रा-

शियोंके मान होतेहैं सो चक्रमें देख लेना. फिर लंकाके पहले तीन राशियोंके उदयके मानोंमें अपने देशके चरखण्डेको ऊन करे और उससे अगली तीन राशियोंमें अर्थात् कर्क, सिंह और कन्या इनके पलात्मक लंकाउदयमें अपने देशके चरखण्डेको विपरीतक्रमसे युक्त करे, ऐसा करनेसे अपने देशके मेषादि छः राशियोंके उदयके मान होतेहैं. फिर इन्होंको उलटा स्थापन करनेसे तुलादि छः राशियोंके अपने देशके उदयमान होतेहैं ॥ १ ॥

अब लग्न स्पष्ट बनानेके प्रकारको कहतेहैं ।

लंकाउदय		
मेष	२७८	मीन
वृषभ	२९९	कुंभ
मिथुन	३२३	मकर
कर्क	३२३	घन
सिंह	२९९	वृश्चिक
कन्या	२७८	तुला

तात्कालिकोऽर्कोऽयन
भागयुक्तस्तद्भोग्यभागै
रुदयो हतः स्वः ॥२॥ खा
ग्न्यु ३०. दृतस्तं रविभो
ग्यकालं विशोधयेदिष्ट
घटीपलेभ्यः ॥ तदग्रतो

राश्युदयांश्च शेषमशुद्धहृत्स्वामि ३० गु
णं लवाद्यम् ॥ ३ ॥ अशुद्धपूर्वेर्भवनैरजाद्यै
र्युक्तं तनुः स्यादयनांशहीनम् ॥

भा०टी०—जिस कालका लग्न साधन करना हो उस
 लका सूर्य स्पष्ट करे, फिर उसमें अयनांश युक्त करनेसे अ-
 यनसूर्य होता है, फिर उस सायनसूर्यकी राशिको छोड़के
 अंशादि शेष बचे वह भोगेहुवे अंशादि हैं उनको ३०
 तीसमें घटानेसे भोग्य अंशादि होते हैं, फिर जो सूर्यकी राशि
 छोड़ दी थी उस राशिके अपने देशके उदयको उन भुक्त
 भोग्य अंशादिकोंसे गुणा करे, फिर गुणनेसे जो फल मिले
 उसमें तीसका भाग देनेसे कलात्मक भुक्त और भोग्यकाल
 होता है. फिर इष्टघडियोंके पल करके उनमें भुक्त और
 भोग्यकालको घटादेवे. ऐसे घटानेसे जो अंक शेष बचे उ-
 समें जिस राशिके उदयको गुणा किया था उससे आगेकी
 जितनी राशियोंके उदय घटे उतने घटावे, ऐसे घटादेनेसे
 जो शेष बचाही उसको ३० से गुणा करे जो गुणनफल
 मिले उसमें अशुद्ध उदय अर्थात् जिस राशिका उदय उ-
 समें नहीं घटा हो उस राशिके उदयका भाग देवे, ऐसा
 भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसमें भेषसे आदि
 लेकर जितनी राशियोंके उदय घटे हों उतनी राशिकी सं-
 ख्याको राशिके स्थानमें युक्त करे, फिर उसमें अयनांशको
 घटादेवे, जो शेष बचे वह उस कालका राश्यादि स्पष्ट लग्न
 होता है. जो भुक्त लग्न बनावे तौ जिस उदयसे गुणा करे

उस उदयसे पीछले उदयको घटादेवै और जो भोग्य लग्न
बनावे तौ उस उदयसे अगले उदयको घटादेवै ॥ ३ ॥

अब इष्टकाल भोग्यकालसे अल्प हो तौ लग्न बनानेका
प्रकार कहतेहैं ।

भोग्याल्पकाले खगुणा ३० हतोऽर्कः
स्वीयोदयाप्रांशयुतो विलग्नम् ॥ ४ ॥

भा०टी०—पूर्वोक्तीतिसे बनायेहुए भोग्यकालसे इष्टकाल
अल्प हो तौ उस इष्टकालको ३० से गुणा करे, फिर उ-
समे सायनसूर्यकी राशिके उदयका भाग देनेसे जो अं-
शादि फल मिले उसको सूर्यमें युक्त करनेसे इष्टकालका
लग्न होताहै ॥ ४ ॥

अब लग्नसे इष्टकाल बनानेका प्रकार कहतेहैं ।

अर्कस्य भोग्यस्तनुभुक्तयुक्तो मध्योद
याढ्यः समयो विलग्नः ॥

भा०टी०—सायनसूर्यके भोग्यकालमें सायनलग्नके भोगे-
हुए अंशोपरसं जो भुक्तकाल मिले उसको युक्त करे, फिर
सायनसूर्य और सायन लग्न इन्होके मध्यमें जितने लग्न हो
उन्होके उदयोकी युक्त करे, फिर उसमें साठका भाग दे
तब लग्नसे इष्टकाल होताहै ॥

अब सायनसूर्य और सायनलग्न ये दोनों एकराशिमें हों तहांपर लग्नसे इष्टकाल बनानेका प्रकार और रात्रिलग्नसाधनका प्रकार कहतेहैं ।

यदैकमे लग्नरवी तदैतद्भागान्तरघ्नोदय
खाग्नि ३० भक्तः ॥ ५ ॥ स्यादिष्टकालो
यदि लग्नमूनं शोध्यो द्युरात्रादथवा रज
न्याः ॥ रात्रीष्टकाले तु सषड्भसूर्यालग्नं
ततोऽप्युक्तवदिष्टकालः ॥ ६ ॥

भा०टी०—जो सायनलग्न और सायनरवि एकराशिमें हो तौ उन दोनोंके अंतरके अंशादिको अपनी राशिके उदयसे गुणा करे, फिर उस गुणनफलमें ३० का भाग देनेसे पलादि इष्टकाल मिलताहै, और जो सायनसूर्यसे सायनलग्न कमती हो तौ पूर्वोक्तप्रकारसे आया हुवा इष्टकाल ६० घडीमें घटानेसे सूर्योदयसे इष्टकाल होताहै और रात्रिमानमें घटानेसे सूर्यास्तसे इष्टकाल होताहै.

जो रात्रिमें लग्न बनाना हो तौ सूर्यमें छः राशि जोडके इष्टकालसे लग्न साधन करे और उस पड्दराशियुक्त सूर्यसेही इष्टकालका साधन करे ॥ ५ ॥ ६ ॥

अब दिनार्ध, रात्र्यर्ध, नत और उन्नत साधन करनेका प्रकार कहते हैं ।

चरपलयुतहीना नाडिकाः पञ्चचन्द्रा
१५द्युदलमथ निशार्धं याम्यगोले विलो
मम् ॥ द्युदलगतघटीनामन्तरं तन्नतं स्या
न्नतरहितदिनार्धञ्चोन्नतं जायतेऽत्र ॥ ७ ॥

भा०टी—सायनसूर्य उत्तरगोलमे हो तौ १५ घडियोमे चर-
पलोंको युक्त करे और सायनसूर्य दक्षिणगोलमे हो तौ चर-
पलोंको १५ घडियोमे घटादेवे ऐसा करनेसे दिनार्द्ध अ-
र्थात् दिनका आधा भाग होताहै, उस दिनार्द्धको ३० मे
घटानेसे रात्र्यर्द्ध होताहै अर्थात् रात्रिका आधाभाग हो-
ताहै, दिनार्द्धको दुगुना करनेसे दिनमान और रात्र्यर्द्धको
दुगुना करनेसे रात्रिमान होताहै.

दिनार्द्ध और इष्टकाल इनका जो अंतर वह नत होताहै,
जो दिवसके इष्टकालतकके घडी पल दिनार्द्धसे अधिक
हों तौ उन घडीपलोंमे दिनार्द्ध घटानेसे जो शेष बचे वह
पूर्वनत होताहै और इष्टकालके घडीपलोंसे दिनार्द्ध अधिक
हो तौ दिनार्द्धमे उन घडी पलोंको घटानेसे जो शेष बचे वह
पश्चिमनत होताहै, आयेहुए इस नतको दिनार्द्धमें घटा-
नेसे जो शेष रहे वह उन्नत होताहै ॥ ७ ॥

अब क्रान्तिके बनानेका प्रकार कहते हैं ।

स्युःक्रान्तिखण्डानि यमांगरामाः३६२
 कब्ध्यमयो ३४१ गोनवबाहवः२९९श्च ॥
 षट्त्रयश्विनः २३६ खेषुभ्रुवो १५० द्विबा
 णा ५२ युक्तायनांशग्रहबाहुभागाः ॥
 ॥ ८ ॥ तिथ्यु १५ हृता लब्धमितानि
 तानि योज्यानि भोग्याहतशेषकस्य ॥
 तिथ्यं १५ शकः क्रान्तिकला भवन्ति
 युक्तायनांशग्रहगोलदिकाः ॥ ९ ॥

भा०टी०—जिस ग्रहकी क्रान्ति बनानी हो उस ग्रहमें अ-
 यनांश युक्त करे, फिर उस सायनग्रहको भुज करे, फिर
 उसभुजके अंश करके उन अंशोंको १५ का भाग देनेसे जो
 फल लब्ध हो वह भुक्त खंड होतेहैं, जो भुक्तखंड हों उनका
 योग करे और उस योगमें १५ का भाग देनेसे जो अंशादि शेष
 रहा हो उसको भोग्यखंडसे गुणा करके उस गुणनफलको
 १५ का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले वह भुक्तखंडोंके
 योगमें युक्त करनेसे जो शेष रहे वह क्रान्तिकला होतीहैं, यह
 क्रान्ति सायनग्रह दक्षिणगोलमें हो ती दक्षिण होतीहै और
 सायनग्रह उत्तरगोलमें हो ती उत्तर होतीहै ॥ ९ ॥

अब अक्षांश और नतांश साधन करनेका
प्रकार कहतेहैं ।

क्रांतिसिद्धान्ति					
१	२	३	४	५	६
३६२	३४१	२९९	२३६	१५०	५२

दशाब्ध्य
४१० न्वि
ताक्षप्रभाष

ष्टि ६० भागोऽक्षकर्णान्वितस्तेनभक्ता
प्रभा सा ॥ खनन्दा ९० हता दक्षिणाः
स्युः पलांशाः पलाः संस्कृताः क्रान्ति
भागैर्नतांशाः ॥ १० ॥

भा०टी०—जिस देशके ग्रह किये हों उस देशकी पलभा
४१० में युक्त करे, फिर उसको ६० का भाग देनेसे जो
अंशादि फल मिले उसमें अक्षकर्ण जोड़ देवै, (यह भाजक
होताहै) इसको पृथक् स्थापित करे, फिर पलभाको ९० से
गुणा कर जो गुणन फल मिले उसको पृथक् स्थापित कियेहुए
भाजकका भाग देवै, ऐसा भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले
वह दक्षिणदिशाके अक्षांश होतेहैं, क्रांतिकलाओको ६० का
भाग देनेसे जो फल मिले वह क्रांत्यंश होतेहैं, और क्रांत्यंश
अक्षांश इन्हांका संस्कार (दोनो एकदिशामें हो तौ योग और
भिन्नदिशामें हो तौ अन्तर) करनेसे नतांश होतेहैं ॥ १० ॥

अब अक्षकर्ण बनानेके प्रकारको कहतेहैं ।

अक्षभायाः कृतिः कार्या शंकुवर्गसम
न्विता ॥ तन्मूलमक्षकर्णश्च पलकर्णस्य
कथ्यते ॥ ११ ॥

मा०टी०—पलभाका वर्ग करे फिर उसमें इष्टछायाका वर्ग युक्त करे उस योगसे वर्गमूल निकाललेवै जो वर्गमूल है वह अक्षकर्ण होता है.

वर्गमूल निकालनेका प्रकार कहतेहैं ।

जहांपर अवयवसहित अंकोंका मूल लेना हो वहांपर ऊपरके अंकको ६० से गुणा करे, फिर उसमें नीचेके अंकको जोड़देवे, फिर उसको ६० से गुणा करे ऐसे दोवार ६० से गुणा करे, फिर इसका मूल ग्रहण करके जो शेष बचे उसमें एक युक्त करके फिर उसको ६० से गुणा करे उस गुणनफलमें विकलाओंको युक्त करे, फिर इसमें दोसे गुणे-हुए मूलमें दो युक्त करके उसका भाग देनेसे जो फल मिले उसको मूलके नीचेके अंकमें जोड़ दे, फिर इसमें ६० का भाग देनेसे मूल निकलता है ॥ ११ ॥

इति श्रीसिद्धान्तचिन्तामणौ त्रिप्रश्नाधिकारश्चतुर्थः ।

अथ पंचमाधिकारः ।

अब चंद्रग्रहणके अधिकारको कहतेहैं ।

तहां प्रथम हर और नतकर्म साधनेका प्रकार कहते हैं ।

नतविहीनहर्तैः खगुणै ३० हर्ताः खशर
भानुभुवो ११२५० दश १० वर्जिताः ॥
रविहरः सविधोर्विदशांशको निजफलं
निजहारहतं क्रमात् ॥ १ ॥ धनमृणं पर
पूर्वनते रवौ शशिनि पूर्वनते स्वमृणे
फले ॥ इतरथोभयतोऽपि फलक्षयः स्फु
टतरौ ग्रहणेऽथ ततस्तिथिः ॥ २ ॥

भा०टी०—तीस ३० में नतकी घटादेवे, फिर जो शेष रहे उस-
को नतसे गुणा करे जो गुणनफल मिले उसका ११२५०
को भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसमें १० को घटा-
देवे, फिर जो शेष रहे वह रविका हर होता है. रविके हरको
१० का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसकी रविके
हरमें घटानेसे जो अवशिष्ट रहे वह चन्द्रका हर होता है.

रविके मन्दफलको रविके हरका भाग देनेसे जो फल
मिले वह कलादि रविका नतफल होता है और चन्द्रके म-
न्दफलको चन्द्रके हरका भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह
चन्द्रका कलादि नतफल होता है. यह नतफल सूर्य प-
श्चिमकपाल (अर्धरात्रिके पश्चात् मध्यान्हपर्यंतका काल
पश्चिमकपाल और मध्यान्हसे अर्धरात्रिपर्यंतका काल पू-

र्वकपाल) में हो तौ रविमें धन (युक्त) करे और सूर्य पूर्वकपालमें हो तौ रविमें ऋण (घटादेवे) करे.

चन्द्रग्रहणमें रात्रिका दिनरूपसे व्यवहार होताहै इसलिये चन्द्रकी कपालव्यवस्था सूर्यकी कपालव्यवस्थासे विपरीत है. जैसा कि—(मध्यान्हसे अर्धरात्रिपर्यंत पूर्वकपाल और मध्यरात्रिसे मध्यान्हतक पश्चिमकपाल) चन्द्र पूर्वकपालमें हो और चन्द्रका मन्दफल ऋण हो तौ चन्द्रका नतफल चन्द्रमें धन करे और चन्द्र पश्चिमकपालमें हो और मन्दफल ऋण हो तौ चन्द्रका नतफल चन्द्रमामें ऋण करे और इससे विपरीत अर्थात् मन्दफल धन हो तौ चन्द्रमा पूर्वकपाल अथवा पश्चिमकपालमें हो तौभी नतफल ऋण होताहै. इसप्रकार इस नतफलका संस्कार करके सूर्य और चन्द्र दोनो ग्रह ग्रहणकेविषे स्पष्ट करे, फिर इन दोनोंसे पूर्वोक्तप्रकारसे तिथि साधन करे ॥ १ ॥ २ ॥

अत्र तात्कालिक ग्रह करनेका प्रकार कहतेहैं ।

यातेष्यनाडीगुणिता द्युभुक्तिः पष्ठ्या
६० हता तद्रहितो युतश्च ॥ तात्कालि
कः स्यात्खचरः शशीनौ पर्वान्त एवं
समलितिकौ स्तः ॥ ३ ॥

मा०टी०—यात अर्थात् वीतीहुई और एष्य अर्थात् अगा-

डी बीतनेवाली जो घडी हैं इन्होंसे ग्रहकी गतिको गुणाकरे फिर इसमें ६० का भाग देनेसे घडी आदि मिलें उन्होंको गत घडी हों तौ ग्रहमें घटादेवे और एष्य घडी हों तौ ग्रहमें युक्तकरे ऐसा करनेसे इष्टकालका ग्रह होताहै. इसी लब्धीको चालन ऐसा कहतेहैं. इसप्रकार चन्द्र और सूर्यको पूर्वोक्तप्रकारसे मिलीहुई तिथिके घडीपलोंका चालन देनेसे चन्द्र और सूर्य पर्वान्तकालमें समत्रिकल होतेहैं ॥ ३ ॥

अब अयन तथा गोलज्ञान और शर
बनानेके प्रकारको कहतेहैं ।

सपाततात्कालिकचन्द्रदोर्ज्यां त्रिं ३ घी
कृता षष्ठा च शरोऽङ्गुलादिः ॥ सपा
तशीतद्युतिगोलादिक् स्यान्मेपादिषड्
भं खलु सौम्यगोलः ॥ ४ ॥ याम्योऽपरं
कर्किमृगादिपट्टके ते चायने दक्षिण
सौम्यके स्तः ॥

भा०टी०—पूर्वोक्तप्रकारसे मिलीहुई तिथिके घडीपलोंका राहुमें चालन देनेसे राहु (पात) पर्वान्तकालमें स्पष्ट होताहै. फिर उस पर्वान्तकालके स्पष्टराहुको पर्वान्तकालके स्पष्ट चन्द्रमामें युक्त करे, फिर उसका भुज करके उससे ज्या साधन करके उस ज्याको ३ से गुणाकरे, फिर उस गुणनफलको ४

का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह अंगुलादि शर होता है। वह शर राहुयुक्त चन्द्रमा जिस गोलमें हो उसी दिशाका है। ता है। अर्थात् राहुयुक्त चन्द्रमा उत्तरगोलमें हो तौ उत्तर और दक्षिणगोलमें हो तौ दक्षिण होता है। अब उत्तरगोल और दक्षिणगोलका लक्षण कहते हैं । मेषादि छः राशि उत्तरगोल हैं और तुलादि छः राशि दक्षिणगोल हैं। कर्कआदि छः राशि दक्षिणायन है और मकरआदि छः राशि उत्तरायण है ॥ ४ ॥

अब चन्द्रबिम्ब, सूर्यबिम्ब और भूमाबिम्ब इन्होंके बनानेका प्रकार कहते हैं.

बिम्बं विधोः स्यात्स्वगतिर्युगाद्रि ७४
भक्ता रवेर्दस्र २ हता शिवा ११ सा ॥५॥
त्रि ३ घ्नीन्दुभुक्तिस्तुरगाङ्ग ६७ भक्ता
भूभार्कभुक्तयद्रि ७ लवेन हीना ॥

भा०टी०—चन्द्रमाकी गतिमें ७.४ का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह अंगुलादि चन्द्रबिम्ब होता है। सूर्यकी गतिको दुगुना करके उसमें ११ का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह अंगुलादि सूर्यबिम्ब होता है। चन्द्रमाकी गतिको तिगुना करके उसमें ६७ का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो उसमें सूर्यकी गतिमें ७ का भाग देनेसे जो फल मिले वह घटानेसे जो शेष रहे वह भूमाबिम्ब होता है ॥ ५ ॥

अब मानैक्यखंड, ग्रास और खग्रास इन्होंके बानेके प्रकारको कहतेहैं.

राहुःकुभामण्डलगः शशांकं शशांकग
श्छादयतीनविम्बम् ॥ ६ ॥ यच्छाद्य
संछादकमण्डलैक्यखण्डं शरोनं स्थगि
तं तदाहुः ॥ छन्नं पुनःश्छाद्यविवर्जितं
तत्खच्छन्नमेतन्निखिलं ग्रहे स्यात् ॥ ७ ॥

भा०टी०—चन्द्रग्रहणमें राहु पृथिवीकी छायाके अंतर्गत होकर चन्द्रमाको आच्छादित करताहै. अतएव यहांपर भूच्छाया छादक और चन्द्र छाद्य हुवा और सूर्यग्रहणमें राहु चन्द्रमाके अंतर्गत होकर सूर्यको आच्छादित करताहै अर्थात् ढकलेताहै तौ यहांपर चन्द्रमा छादक और सूर्य छाद्य हुवा. छाद्य और छादक इन दोनोंके बिम्बोंका योग करके अर्थात् चन्द्रग्रहणमें चन्द्रमा और भूमिके बिंबका और सूर्यके ग्रहणमें सूर्य और चन्द्रके बिंबका योग करके अर्थ करनेसे मानैक्यखण्ड होताहै. फिर इस मानैक्यखण्डमें पूर्वोक्त अंगुलादि शर घटानेसे जो शेष बचे वह अंगुलादि ग्रासबिम्ब होताहै. मानैक्यखण्डमें शर नही घटे तौ ग्रहण नहीं होगा ऐसा जानना. ग्रासबिम्ब अधिक हो और छाद्यबिम्ब अल्प हो तौ ग्रासबिम्बमें छाद्यबिंबको घटानेसे जो शेष रहे वह ख-

ग्रासबिम्ब होता है अर्थात् उतने अंगुल प्रत्यंगुल आकाश
ग्रसा जावेगा ऐसा जाने. -सूर्यके ग्रहणमेंभी ग्रासादि ब-
नानेका येही प्रकार है ॥ ७ ॥

अत्र ग्रहण तथा खग्रासमर्दकी स्थिति बना-
नेका प्रकार कहते हैं.

द्वि २ घाच्छराच्छन्नयुताहतात्पदं खाष्टे
न्दु १८० निघ्नं विवरेण गत्योः ॥ भक्तं
स्थितिः स्याद्धटिकादिरेवं खच्छन्नतो
मर्दमपि प्रजायते ॥ ८ ॥

भा०टी०—पहले कहे हुए शरको दुगुना करे, फिर उसमें ग्रास
युक्त करे, फिर उसको ग्रासबिम्बसे गुणा करे जो गुणनफल
मिले उसका वर्गमूल निकाले, फिर उस वर्गमूलको १८०
से गुणा करे, फिर जो गुणनफल मिले उसका चन्द्रसूर्यकी
गतिके अंतरका भाग देनेसे जो भाग लब्ध हो वह घटिकादि
मध्यस्थिति होती है. और शरको दुगुना करके उसमें ख-
ग्रास युक्त करके उसको खग्रासबिम्बसे गुणा करे जो गुणन
फल मिले उसका वर्गमूल निकाले, फिर उस वर्गमूलको
१८० से गुणा करे जो गुणनफल मिले उसको चन्द्रसूर्यकी
गतिके अंतरका भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह घटि-
कादि मर्द होता है ॥ ८ ॥

- अब स्पर्शस्थिति, मोक्षस्थिति, स्पर्शमर्द और मोक्षमर्द इन्हींके बनानेका प्रकार कहतेहैं.

विक्षेपतो नागयुगै ४८ विभक्ता नाड्या
दिकं यत्फलमत्र लब्धम् ॥ द्विष्टा स्थिति
स्तेन युता विहीना स्यातां क्रमात्स्पा
र्शिकमोक्षके ते ॥ ९ ॥ ओजे पदे पात
युतो विधुश्चेद्युग्मेऽन्यथेवं स्थितिवद्वि
मर्दं ॥ सूर्योदयादस्तमयाच्च गम्यो म
ध्यो ग्रहः पर्वविरामकाले ॥ १० ॥ स्थि
त्या विमर्दनं विवर्जितेऽस्मिस्तत्स्पर्श
सम्मीलनके क्रमेण ॥ युक्तेऽथ तस्मि
स्थितिमर्दकाभ्यां मुक्तिस्तथोन्मीलन
कं निजाभ्याम् ॥ ११ ॥

भा०टी०—चंद्रग्रहणमें पूर्वानित शरकां ४८ का भाग देय जो फल लब्ध होय उसको घटिकात्मक मानकर मध्य-स्थितिमें युक्त करै और घटावै तौ क्रमसे स्पर्शस्थिति और मोक्षस्थिति होतीहै. और सूर्यग्रहणमें तौ पातयुक्त चन्द्रमा विषमपदमें होय तौ पूर्वोक्तप्रकारसे आयाहुवा घटिकादि फल मध्यस्थितिमें युक्त करै और घटावै तब स्पर्शस्थिति

और मोक्षस्थिति होती है, परंतु पातयुत चन्द्र
 हो तौ फल मध्यस्थितिमें युक्त करनेसे मोक्षस्थिति और
 घटानेसे स्पर्शस्थिति होती है. तथा स्पर्शिक और मौक्षिक
 शरसे इसप्रकार आयेहुवे घटिकादि फलका मर्दस्थितिमें
 संस्कार करनेसे स्पर्शमर्द और मोक्षमर्द होते हैं. सूर्यग्रहणमें
 सूर्योदयके अनंतर और चन्द्रग्रहणमें सूर्यास्तके अनंतर
 जो भावी पर्वावसानकाल अर्थात् अमावास्या और पूर्णिमा
 इन तिथियोंका जो अन्त वही स्पष्ट ग्रहणमध्यकाल होता है.
 तात्पर्य इसका यह है कि पूर्णिमाका अन्त येही चन्द्रग्रहणमें
 स्पष्टमध्यकाल होता है और सूर्यग्रहणमें तौ लम्बनसंस्कृत
 स्पष्ट दशांत येही स्पष्ट मध्यकाल होता है. उस मध्यकालको
 दोस्थानमें लिखकर एकस्थानमें स्पर्शस्थिति तथा स्पर्श-
 मर्दको घटादे तब जो शेष रहै सो स्पर्शकाल तथा
 सम्मीलनकाल होता है और दूसरे स्थानमें लिखे हुये मध्य-
 कालमें मोक्षस्थिति तथा मोक्षमर्दको युक्त करै तब जो
 अङ्कयोग हो वह मोक्षकाल तथा उन्मीलनकाल होता है.
 मोक्षकालमें स्पर्शकाल घटादेय तब पर्वकाल होता है और
 उन्मीलनकालमें सम्मीलनकालको घटादे तब जो शेष
 रहै सो खग्रात्तपर्वकाल होता है ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

अब बलनसाधनप्रकार कहते हैं ।

खाङ्गा ९० हतं स्वद्युदलेन भक्तं स्पर्श

विमुक्तौ च नतं लवाः स्युः ॥ तज्ज्याह
 ताश्चाक्षलवा विभक्तास्त्रिभज्यया प्रा
 गपरे नते स्यात् ॥ १२ ॥ सौम्यान्तका
 शं बलनं ग्रहस्य युक्तायनांशस्य तु को
 टिजीवा ॥ वाणैर्विभक्तायनदिक्तथा
 न्यद्वागाद्यमेकान्यदिशोस्तयोश्च ॥
 ॥ १३ ॥ योगान्तरज्याहतमानयोग
 खण्डं त्रिभज्याहतमंगुलाद्यम् ॥ स्फुटं
 भवेत्तद्वलनं रवीन्द्रोः प्राग्रसमोक्षे
 विपरीतदिक्के ॥ १४ ॥

भा०टी०—स्पर्शनत तथा मोक्षनतको ९० से गुणाकरे
 फिर उस गुणनफलको स्वदिनार्द्धका (चन्द्रग्रहणमें रा-
 त्र्यर्द्धका और सूर्यग्रहणमें दिनार्द्धका) भाग देकर जो अं-
 शादि लब्धि होय उसको नतांश जाने. उन नतांशोंसे ज्या
 साधन करके उस ज्यासे स्वदेशीय अक्षांशोंको गुणाकरे
 फिर उस गुणनफलको १२० का भाग देय तब जो लब्धि
 होय उसको अंशादि स्पर्शवलन तथा मोक्षवलन जानै. नत
 पूर्वदिक् होय तौ आयाहुवा नत उत्तरदिक् होताहै और नत
 पश्चिमदिक् होय तौ बलन. दक्षिणदिक् होताहै, इसको अक्ष-

जवलन कहते हैं. अयनांशयुक्त तात्कालिक ग्रहकी (चन्द्र अथवा सूर्यकी) कोटी करके उस कोटीकी ज्याको ५ का भाग देय जो लब्धि होय वह आयनवलन होता है. इस आयनवलनकी दिशा सायनग्रह उत्तरगोलमें होय तौ उत्तर और दक्षिणगोलमें होय तौ दक्षिण होती है. अक्षजवलन और आयनवलन इन दोनोंकी एक दिशा होय तौ दोनोंका योग करलेय और दोनोंकी भिन्नदिशा होय तौ अंतर करलेय, तदनन्तर उस योगकी अथवा अंतरकी ज्या साधके उस ज्याको मानैक्यखंडसे गुणा करै, फिर उस गुणनफलको १२० का भाग देय तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह स्फुटवलन (वलनांघ्रि) होता है. उसकी दिशा वलनयोग अथवा वलनोके अन्तरकी जो दिशा हो सोही होती है. सूर्य और चन्द्रके ग्रास और मोक्ष पूर्वदिशामें होतेहो तौ वलनकी दिशा विपरीत समझना. जैसा कि सूर्यग्रहणमें ग्रास पूर्वदिशामें होय तौ स्पर्शवलन विपरीत अर्थात् उत्तर होय तौ दक्षिण और दक्षिण होय तौ उत्तर समझना और चन्द्रग्रहणमें मोक्षवलन विपरीत अर्थात् दक्षिण होय तौ उत्तर और उत्तर होय तौ दक्षिण समझना. ग्रहणका जब ग्रस्तोदय अथवा ग्रस्तास्त होय तौ 'रात्रेःशेषम्' इत्यादि जातकग्रंथोंमें जो नतसाधन करनेका प्रकार कहा है उस पद्धतिसे नतसाधन करके उस नतको ९० से गुणा करे, फिर उस

गुणनफलको अपने २ दिनार्द्धका भाग देय तब अंशादि लब्धि होय उसको नतांश जाने, फिर उन नतांशोंका भुज करके उस भुजसे ज्यासाधन करे, फिर उस ज्यासे पूर्वोक्त-पद्धतिसे अक्षवलन साधन करे ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

अब स्पर्शिक और मौक्षिकशरसाधन कहते हैं ।

माध्यः शरस्त्वोजपदोद्भवश्चेतिस्थित्य
 नि ३ भागोनयुतो युतोनः ॥ युग्मे वि
 धोर्वा प्रथमान्त्यवाणौ चन्द्रग्रहे व्यस्त
 दिशः शराःस्युः ॥ १५ ॥

मा०टी०—चन्द्रग्रहणमें ग्रहणमध्यकालीन शर विषमपदस्थ पातयुक्त चन्द्रसे उत्पन्न हुवाही तौ उस शरमें मध्यस्थितिका तृतीयांश घटादेवै जो शेष बचे वह स्पर्शकालीन शर और युक्त करे तौ जो योग होय वह मोक्षकालीन शर होताहै, परंतु सपातचन्द्र समपदमें होय तब तौ मध्यस्थितिका तृतीयांश मध्यकालीनशरमें युक्त करनेसे स्पर्शिक शर और घटानेसे मौक्षिक शर होताहै, अथवा तात्कालिक सपातचन्द्रसे स्पर्शशर और मोक्षशर साधन करे, यह स्पर्श, मध्य और मोक्षशर चन्द्रग्रहणमें परिलेख क्रियामें विपरीतदिक् अर्थात् उत्तर होय तौ दक्षिण और दक्षिण होयतौ उत्तर जानना ॥ १५ ॥

अब परिलेख कहते हैं ।

ग्राह्यार्धसूत्रेण विधाय वृत्तं मानैक्यखं
डेन च साधिताशम् ॥ बाह्येऽत्र वृत्ते व
लनं यथाशं प्राक्स्पर्शिकं पश्चिमतश्च
मोक्षम् ॥ १६ ॥ देयं रवेः पश्चिमपूर्वत
स्ते ज्यावच्च बाणौ वलनाग्रकाभ्याम् ॥
उत्पाद्य मत्स्यं वलनाग्रकाभ्यां माध्यः
शरस्तन्मुखपुच्छसूत्रे ॥ १७ ॥

भा०टी०—जलके समान इकसार करीहुई भूमिपर अभीष्ट-
स्थानमें बिंदुकी कल्पना करके चन्द्रग्रहण होय तौ चन्द्र-
बिम्बके और सूर्यग्रहण होय तौ सूर्यबिम्बके जो अंगुल प्र-
त्यंगुल होय उनके अर्धपरिमाणका एक वर्तुल खींचकर
और मानैक्यखंडके अंगुलके प्रमाणका कंपास अथवा सू-
त्रसे दूसरा एक वर्तुल उसी बिन्दुके ऊपरसे खींचकर उस
बिंदुके ऊपर पूर्वपश्चिम और उत्तरदक्षिण दो रेखा खींचे.
इस रीतिसे जिसकी दिशाका साधन क्रियाहै ऐसे बाह्य व-
र्तुलमें वलन दक्षिण होय तौ दक्षिण और उत्तर होय तौ
उत्तरभागमें देदेवै. चन्द्रग्रहणके विषे स्पर्शिकवलन पूर्व-
दिशाके चिन्हसे उत्तर होय तौ उत्तर और दक्षिण होय तौ
दक्षिणदिशामें देवै और मौक्षिकवलन पश्चिमदिशाके चि-

न्हसे अपनी २ दिशामें देवै, परंतु सूर्यग्रहणमें इससे विपरीत देवै, जैसा कि स्पर्शवलन पश्चिमदिशाके चिन्हसे और मोक्षवलन पूर्वदिशाके चिन्हसे अपनी २ दिशामें देवै, वलनका चिन्ह धनुष्यके आकारका करै, पीछे स्पर्श तथा मोक्षवलनोंके चिन्हसे स्पर्शिक तथा मौक्षिक शरके जितने अंगुल हांय उतनेही अंगुलोंपर स्पर्शिक तथा मौक्षिकशरका चिन्ह ज्यावत् करै, इसप्रकार धनुष्याकार बाह्यवर्तुलमें जो रेखाप्रदेश है उसके ऊपर दोनों शरके चिन्ह करके दोनों वलनचिन्होंके मध्यमें सूत्रका एक अग्र धारण करके अथवा कंपास रखकर स्पर्श वलनके चिन्हके ऊपरसे एक अर्धबिंब निकाले तथा मोक्षवलनके चिन्हके ऊपरसेभी एक अर्धबिंब निकाले, इन बिंबाधीका जहांपर योग होताहै उस भागमें मत्स्यके मुखपुच्छ विभागकी कल्पना करे, तात्पर्य इसका यह है कि समपरिमाण कंपाससे स्पर्श तथा मोक्षवलनोंके चिन्होंसे निकालेहुए जो दो वर्तुल हैं उनका संधि जहांपर होताहै उसमें मत्स्यका आकार उत्पन्न होताहै उसके मध्यमें मुख और पुच्छकी कल्पना करे और उस मत्स्यके मुखसे केन्द्रको व्याप्त करनेवाली एक रेखा पुच्छतक खींचे ॥ १६ ॥ १७ ॥

अब ग्रहणके स्पर्श, मध्य और मोक्षके स्थान कहतेहैं.
केन्द्राद्यथाशं स्वशराग्रकेभ्यो वृत्तैः कृ

तैर्ग्राहकखण्डकेन ॥ स्युःस्पर्शमध्य
ग्रहमोक्षसंस्था अथांकयेन्मध्यशराग्र
चिन्हात् ॥ १८ ॥

भा०टी०—पीछे उस केन्द्रसे अर्थात् मध्यबिन्दुसं अपनी दिशाके तरफ मध्यशर देवै, इस रीतिसे तीनों शरोंके करे और सूर्यग्रहणमें चन्द्रबिंब और चन्द्रग्रहणमें भूभाबिंबके अर्धपरिमाण कंपाससे स्पर्शशरके चिन्हके एक वर्तुल निकाले, उस वर्तुलके भीतर ग्राह्य अर्थात् सूर्य और चन्द्रबिंबके वर्तुलमें जिस स्थानपर इस ग्राहक अर्थात् चन्द्र और भूभाबिंबके वर्तुलका स्पर्श होताहै वहांपरही ग्रहणका स्पर्श होताहै, इसी रीतिसे मोक्षशरके चिन्हके ऊपरसे जो वर्तुल निकालाहो उसका जहांपर स्पर्श होताहै वहांपरही ग्रहणका मोक्ष होताहै, और मध्यशरके ऊपरसे जो वर्तुल निकलताहै उसका जहांपर स्पर्श होगा वहांपर ग्रहणका मध्य होगा, इसरीतिसे ग्रहणके स्पर्श, मध्य तथा मोक्षकी संस्था होतीहै, मध्यग्रास ग्राह्यबिंबका उल्लंघन करके जितना बाहर पड़ेगा उतनाही आकाशका ग्रास होगा, इसको पूर्णग्रास समझना और जब ग्राह्यबिंबके एकदेशको ग्रहण करे तौ उतनाही खण्डग्रास समझे और जब ग्राह्यबिंबको स्पर्श न करे तौ ग्रहणका अभाव है अर्थात् ग्रहण नहीं होगा ऐसा जाने ॥ १८ ॥

अब सब ग्रहणोंके उपयोगी इष्टमास कहतेहैं-

आद्यन्तबाणाग्रगते च रेखे ज्ञेयाविमौ
 प्रग्रहमुक्तिमार्गौ ॥ मानान्तरार्धेन वि
 लिख्य वृत्तं केन्द्रेऽथ तन्मार्गयुतद्वये
 ऽपि ॥ १९ ॥ भूमार्धसूत्रेण विधाय वृत्ते
 सम्मीलनोन्मीलनके च वेद्ये ॥ मार्गप्र
 माणे विगणय्य पूर्वं मार्गांगुलघ्नं स्थिति
 भक्तमिष्टम् ॥ २० ॥ इष्टांगुलानि स्युरथ
 स्वमार्गे दद्यादिमानीष्टवशात्तदग्रे ॥
 वृत्ते कृते ग्राहकखण्डकेन स्यादिष्टकाले
 ग्रहणस्य संस्था ॥ २१ ॥

मा०टी०—मध्यशराग्रबिन्दुसे स्पर्शशराग्रचिन्हपर्यन्त एक रेखा खींचे यह ग्राहकका ग्रहण करनेका मार्ग है ऐसा जाने और मध्यशराग्रबिन्दुसे मोक्षशराग्रचिन्हतक दूसरी एक रेखा खींचे वह ग्राहकका मोक्षका मार्ग समझे. इस-रीतिसे तीनों शराग्रबिन्दुओंको स्पर्श करनेवाली रेखा धनु-ष्यके आकारकी हांतीहै.

ग्राह्य और ग्राहकके बिंबोंका जो अर्ध उसके जो अंगुल होय तत्परिमित कंपाससे केन्द्रके ऊपर एक वर्तुल खींचे, यह

बाह्यवर्तुल जहांपर स्पर्श करे वहांपर सम्मीलन होता है और ग्रहणके मोक्षमार्गका जहांपर स्पर्श होता है वहांपर भूमा-
बिंबार्धपरिमित कंपाससे एक वर्तुल खींचकर उस बाह्यवर्तु-
लका जहांपर स्पर्श होता है वहांपर उन्मीलन होता है.
भूमाबिंबार्ध ग्रहण करनेका प्रयोजन यह है कि सूर्यग्रहण
प्रायः खग्रास नहीं होनेके कारण उसमें संमीलन और उ-
न्मीलनकालका संभव कम है. कदाचित् होय तौभी अल्प
होते हैं और वहभी बिंबयोगही होता है उसकोही खग्रास क-
हते हैं. क्योंकि छाद्य और छादकबिम्ब समान होते हैं.

अब इष्टग्राससाधन कहते हैं—कोई जिज्ञासु ऐसा प्रश्न
करेकी ग्रहणके स्पर्शकालसे अभीष्टकालतक बिम्बका कितना
ग्रास हुवा अथवा मोक्षकालसे प्रथम अभीष्टकालमें कितना
ग्रास हुवा है, जब ग्रासमार्गरेखांगुलोंको और मोक्षमार्गरेखां-
गुलोंको गिने, फिर उन रेखांगुलोंसे अलग २ इष्टकालको
गुणाकरे, जो गुणनफल आया होय उसको स्पर्शकालसे इष्ट-
ग्रास चाहिये तौ स्पर्शस्थितिसे और मोक्षकालसे पूर्व इष्टग्रास
चाहिये तौ मोक्षस्थितिसे भागकर जो अंगुलादि फल लब्ध
होय उसको अपने २ मार्गमें देवै, जैसे कि इष्टस्पष्टशरसे
स्पर्शमार्गमें और मोक्षशरसे मोक्षमार्गमें देदेवै, जो इष्टांगुल
आयेहों उतनेही अंगुलोंपर चिन्ह करके उसके आगे इष्टांगु-
लाग्रचिन्हपर ग्राहकबिंबार्धपरिमित कंपाससे वर्तुल खींचे,

ग्राह्यबिंबका जितना आच्छादन हुआहो उतनाही इष्टकालमें
ग्रास हुआ ऐसा जाने ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

इति श्रीसिद्धान्तचिन्तामणौ चन्द्रपर्वाधिकारःपंचमः ।

अथ सूर्यग्रहणाधिकारःषष्ठः ।

अब नतोन्नतांशसाधनप्रकार लिखतेहैं-

दर्शान्तकाले त्रि ३ भहीनलग्नं कार्यं च
तत्क्रान्तिपलान्तरैक्यम् ॥ भिन्नैकदिक्
त्वे नतभागकाः स्युः खाङ्कच्युतास्ते
पुनरुन्नतांशाः ॥ १ ॥

मा०टी०—अमावास्याके अन्तका लग्न करके उस लग्नमें
तीन राशि घटादेय तब त्रिभोनलग्न होताहै. तिस त्रिभोन-
लग्नसे पूर्वोक्तप्रकारसे क्रान्ति लाकर उन क्रान्त्यंशोका और
अक्षांशोका संस्कार करै अर्थात् क्रान्ति दक्षिण होय तौ क्रा-
न्त्यंशोको अक्षांशोमें युक्त करदेय और क्रान्ति उत्तर होय तौ
उन क्रान्त्यंशोको अक्षांशोमें घटादेय तब दक्षिण नतांश हो-
तेहैं और क्रान्ति उत्तर होय और अक्षांशोकी अपेक्षा अधिक
होय तब क्रान्त्यंशोमें अक्षांशोको घटानेसे उत्तर नतांश होतेहैं
और इन नतांशोको ९० में घटादेय तब उन्नतांश होतेहैं.

अब लग्न, मध्यकाल और नतिसाधन लिखतेहैं.

त्रिभोनलग्नार्कविशेषशिञ्जिनी खराम

३० भक्ता घटिकादि लम्बनम् ॥ तदुन्नत
 ज्यानिहतं नखेन्दु १२० भिर्भक्तं स्फुटं
 स्यात्स्वमृणं तिथौ क्रमात् ॥२॥ त्रिमोन
 लग्नाधिकहीनके रवेस्ततोऽसकृल्लग्नविल
 म्वनादिकम् ॥ नतांशजीवार्कलवान्विता
 ष्टहृन्नतांशदिक् चांगुलपूर्विका नतिः ॥३

भा०टी०—त्रिमोनलग्न और दर्शान्तस्पष्टरवि इन दोनोंका अन्तर करके जो अंश आवै उनसे ज्यासाधन करके उस ज्यामें ३० का भाग देय तब जो लब्धि होय वह घट्यादि मध्यम लम्बन होता है. पूर्वोक्तप्रकारसे आयेहुये उन्नतांशोंकी ज्यासे इस घटिकादि मध्यमलम्बनको गुणा करै तब जो गुणनफल होय उसमें १२० का भाग देनेसे जो लब्धि हो वह घटिकादि स्फुटलम्बन होता है. यह लम्बन यदि त्रिमोनलग्न दर्शान्तस्पष्टरविकी अपेक्षा अधिक होय तौ धन और कम होय तौ ऋण होता है. दर्शान्तकी घटिकाओंमें लम्बनको धन या ऋण करै तब लम्बनसंस्कृत दर्शान्त होता है. इस लम्बनसंस्कृत दर्शान्तको इष्टकाल समझे और फिर उससे रवि, लग्न इत्यादिका साधन करके प्रथम कही पद्धतिसे उस त्रिमोनलग्नसे लम्बन लाकर उसका दर्शान्तकी घटिकापलोंमें संस्कारे करे. फिरभी इस लम्ब-

नसंस्कृत दर्शान्तसे रवि, त्रिभोनलग्न, लम्बनादि साधन करके उस लम्बनका दर्शान्तघटिकादिमें पूर्ववत् संस्कार करे. इसरीतिसे जबतक दर्शान्त स्थिर होय तहांतक बारबार संस्कार करे. जो लम्बनसंस्कृत स्थिर दर्शान्त है वह सूर्य-प्रहणमें मध्यकाल होताहै.

लम्बनसंस्कृत त्रिभोनलग्नोत्पन्न नतांशोंसे ज्या साधन करके उस ज्यामें १२ का भाग देय तब जो कला आदि लब्धि होय वह उस ज्यामें युक्त करे. फिर उसमें ८ का भाग देनेसे जो लब्धि होय वह अंगुलादि नति होतीहै. और इस नतिकी दिशा उन नतांशोंके अनुसार दक्षिण अथवा उत्तर होतीहै. प्रायः यह नति दक्षिणही रहतीहै ॥ २ ॥ ३ ॥

अब मध्यस्थित्यादिका साधनप्रकार कहतेहैं.

स्पष्टोऽत्र बाणो नतिसंस्कृतः स्याच्छन्नं
ततः प्राग्वदतः स्थितिश्च ॥ स्थित्योन
युक्ताद्गणितागताच्च तिथ्यन्ततो लम्ब-
नकं पृथक्स्थम् ॥ ४ ॥ स्वर्णं च तस्मि
न्प्रविधाय साध्यस्तात्कालिकः स्पष्टश-
रः स्थितिश्च ॥ तयोनयुक्ते गणितागते
तत्स्वर्णं पृथक्स्थं मुहुरेवमेतौ ॥ ५ ॥
स्यातां स्फुटौ प्रग्रहमुक्तिकालौ सकृत्कृ

ते लम्बनके सकृत्स्तः ॥ तन्मध्यकाल
न्तरगे स्थिती स्फुटे शेषं शशांकग्रह
णोक्तमत्र ॥ ६ ॥

भा०टी०—स्थिरलम्बनसंस्कृत तिथ्यन्तकालीन सपातचन्द्र-
मासे उत्पन्न हुवा जो शर है उसका नतिके साथ संस्कार
(दोनोंकी एक दिशा होय तौ योग और होय तौ-अन्तर) करे तब सूर्यग्रहणके विषे स्पष्टशर हो-
ताहै. इस स्पष्टशरसे चन्द्रग्रहणाधिकारमें कही पद्धतिसे
ग्रास और मध्यस्थितिका साधन करे. स्पर्शकाल साधन
करना हो तौ पूर्वोक्तरीतिसे आयाहुवा तिथ्यन्त स्पर्शस्थितिसे
रहित करे अर्थात् तिथ्यन्तमें स्पर्शस्थिति घटादेवै और मो-
क्षकाल साधन करना हो तौ तिथ्यन्तमें मोक्षस्थिति युक्त
करे तब स्पर्शतिथ्यन्त और मोक्षतिथ्यन्त होतेहैं. इन
दोनों तिथ्यन्तोंसे पूर्वोक्तप्रकारसे लम्बन साध्य करे, पीछे
उस लम्बनको अलग २ दो जगहपर स्थापन करे. यह
लम्बन स्पर्शतिथ्यन्त और मोक्षतिथ्यन्तमें पूर्वोक्तप्रका-
रसे धन ऋण करे, इस लम्बनसंस्कृत तिथ्यन्तसे स्पष्टशर
और स्थितिका प्रथमकी पद्धतिके अनुसार साधन करे, फिर
उस स्थितिसे स्पर्शकाल और मोक्षकाल साधन करनेके
लिये गणितागत तिथ्यन्तमें संस्कार (स्पर्शमें हीन और
मोक्षमें युक्त) करनेसे जो स्पर्शतिथ्यन्त और मोक्षति-

ध्यन्त आवै उसमें पृथक् स्थित लम्बनका धन अथवा ऋण पूर्वोक्तपद्धतिसे संस्कार करै और फिरभी इस लम्बनसंस्कृत तिध्यन्तसे लंबन, स्पष्टशर, स्थिति पूर्ववत् निकाले जबतककी यह लम्बन और स्थिति स्थिर होजाय, ऐसे करनेपर स्पर्शकाल और मोक्षकाल स्पष्ट होतेहैं, यह असकृत् लम्बनका प्रकार कहा, इसप्रकारसे गणित करनेपर ग्रहणके स्पर्श, मध्य और मोक्षकालमें भूल नहीं रहैगी और स्पर्श तथा मोक्षलम्बन सकृत् (एक बार) करनेसे स्पर्श-मोक्षकालोंमें स्थूलता रहनेका संभव है क्योंकि वह सकृत् (एक बार किये हुवे) हीहैं।

स्थिर स्पर्शकाल और स्थिर मध्यग्रहणकाल इनका जो अन्तर वह स्पर्शस्थिति और स्थिर मोक्षकाल और स्थिर ग्रहणमध्यकाल इनका जो अंतर वह मोक्षस्थिति होताहै, शेष बलनादि सब गणितप्रकार चन्द्रग्रहणाधिकारोक्तपद्धतिसे करे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

अत्र ग्रहणका संभव होनेपर ग्रहण नहीं है

ऐसा कहना और वर्णज्ञान कहतेहैं।

अर्कांशकोऽर्कस्य विधोर्नृपांशो नादेश
नीयः खलु खण्डितोऽपि ॥ अल्पार्ध
सर्वग्रहणे शशी स्याद्भूजोऽसितो बभ्रुरि
नस्तु कृष्णः ॥ ७ ॥

भा०टी०—गणितसे आयाहुवा सूर्यका ग्रास जो बके द्वादशांश तुल्य होय तब सूर्यग्रहणका और चन्द्रग्रहणमें चन्द्रबिंबके षोडशांशसे अधिक नहीं होय जब चन्द्रग्रहणका असंभव है ऐसा कहना.

• चन्द्रग्रहणमे ग्रास चन्द्रबिंबका चतुर्थांश-अथवा उससे भी कमती होय तब चन्द्र धूम्रवर्ण (धूमाकासा रंग) और यदि चन्द्र अर्द्धग्रस्त होय तौ कृष्णवर्ण और ग्रस्त होय तौ पिंगलवर्ण (बिजुलीकेसे रंग) का होताहै और सूर्यग्रहणमे सूर्य तौ निरन्तर कृष्णवर्णही होताहै ॥ ७ ॥

अब ग्रहणसंभव और ग्रहणके स्वामी जाननेकी-
रीति कहतेहैं ।

गोचन्द्रा हिमगोर्भवाश्च तरणेर्मानैक्य
खण्डं शरे तन्न्युने ग्रहणं भवेदिति बुधै
श्चिन्त्यः पुरा संभवः ॥ चक्राढ्यः खलु
मध्यमार्कतमसोर्यांगो द्विनिघ्नो द्वियु
क् पर्वेशो मुनिभक्तशेषकमितो ज्ञेयो
विरिंच्यादिकः ॥ ८ ॥

भा०टी०—चन्द्रका मानैक्यखण्ड परमावधि १९ होताहै और सूर्यका मानैक्यखण्डका परमावधि ११ का होताहै जो स्पष्टशर मानैक्यखण्डसे कमती होय तौ चन्द्र और सूर्यके

ग्रहणका संभव है ऐसा जाने. इसरीतिसे विद्वान्‌लोगोंने प्रथम ग्रहणके संभवासंभवको जानकर गणितको आरंभ करना.

मध्यमसूर्यमें राहु युक्त करे, फिर उस योगमें चक्र युक्त करे, पीछे उस योगको दोसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें २ दो युक्त करे तब जो अंक होय उनमें ७ सातका भाग देय तब यदि ० शून्य शेष रहै तौ ब्रह्मा, १ एक शेष रहै तौ चन्द्रमा, २ दो शेष रहै तौ इन्द्र, ३ तीन शेष रहै तौ कुबेर, ४ चार शेष रहै तौ वरुण, ५ पांच शेष रहै तौ अग्नि, ६ छः शेष रहै तौ यम ग्रहणका स्वामी होताहै. बृहत्संहिताकेविषे वराहमिहिराचार्यने लिखाहै.

“षण्मासोत्तरवृद्ध्या पर्वशाः सप्तदे
वताः क्रमशः ॥ ब्रह्मशशीन्द्रकुबेरा व
रुणाग्नियमाश्च विज्ञेयाः ॥”

उत्तरोत्तर छः २ मासकी वृद्धि करके क्रमसे ब्रह्मा, चन्द्रमा, इन्द्र, कुबेर, वरुण, अग्नि और यम, यह सात देवता ग्रहणके स्वामी होतेहैं, ज्योतिषीलोग इन ग्रहणके स्वामियोंसे संसारसंबंधी शुभाशुभ फल कहतेहैं ॥ ८ ॥

इति श्रीसिद्धान्तचिन्तामणौ सूर्यपर्वाधिकारःषष्ठःसमाप्तः ।

अब सारणीसे मध्यमग्रह बनानेका प्रकार कहतेहैं ।

प्रथम ग्रंथमें कही पद्धतिसे अहर्गणको साधन करे, पीछे

उस अहर्गणको एकं, दशं, शतं, सहस्रं, इसप्रकार गणना करे, जो जो अंक मिले वह अपने २ गृहके कोष्टकोसे एकक दशांक, शतांक, सहस्रांक जो कोष्टक हैं उसीसे ग्रहण करे और जोड़दे, उसी योगमें चक्रप्रमाण नीचे लिखेहुवे क्षेपक युक्त करे तब वह स्पष्ट मध्यमग्रह होताहै। उसमें ग्रहप्रमाण देशान्तर देवै।

अब मन्दफल लानेका प्रकार कहतेहैं।

ग्रहको अपने अपने मन्दोच्चसे घटादेवै वह मन्दकेन्द्र होताहै। फिर उस मन्दकेन्द्रका भुज करे, भुजके अंश बनालेवै, फिर उस भुजांशप्रमाण मन्दफलका कोष्टक ग्रहण करे, फिर उसके अग्रके कोष्टकको ग्रहण करे, पीछे दोनोंका जो अंतर उसको कलादिकोसे गुणा करे, जो गुणनफल मिले उसमें ६ छः का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह मन्दफलमें युक्त करे तब वह स्पष्ट मन्दफल होताहै। उसी मन्दफलको मध्यमग्रहमे धन ऋण करे। केन्द्र मेषादि छः राशिमें होय तौ धन और तुलादि छः राशिमें होय तौ ऋण करे, तब वह मन्दस्पष्ट ग्रह होताहै। उसी मन्दफलके नीचे जो गतिफल है उसको मध्यमगतिमें धन और ऋण करे तब वह मन्दस्पष्ट गति होतीहै।

अब बीज देनेकी रीति कहतेहैं।

उदयांतर सूर्यराश्यंशप्रमाण सूर्यचन्द्रमे देवै और भुज-

फल सूर्यके मन्दकेन्द्र भुजांशप्रमाण देवै और चरफल सूर्यके राश्यंशप्रमाण सर्वग्रहोंमें देवै.

अब शीघ्रफल लानेकी रीति कहतेहैं ।

ग्रहको अपने २ शीघ्रोच्चसे घटादेवै वह शीघ्रकेन्द्र होताहै. उस शीघ्रकेन्द्रकी राशि छःसे अधिक होवे तौ १२ राशिमें घटादेवै, फिर शेष जो बचे उसका भुज करके उसके अंश बनालेवै, फिर उस भुजांशप्रमाण कोएकसे शीघ्रफलके अंक ग्रहण करे, फिर उसके अग्रकोष्टकके अंक ग्रहण करे और दोनोंका अंतर निकालके उन अंतराकोंसे कलादिको गुणा करे जो गुणनफल आवै उसमें ६० का भाग देवै जो फल लब्ध होय वह अग्रकोष्टकके नीचेके अंक प्रथम कोष्टकांकोसे अधिक हो तौ शीघ्रफलमें धन करे और यदि अग्रकोष्टकांक प्रथम कोष्टकांकोसे कमती हो तौ शीघ्रफलमें ऋण (घटादेवै) करे वह स्पष्ट शीघ्रफल होताहै. उसीको मन्दस्पष्ट ग्रहमें धन ऋण करे. शीघ्रकेन्द्र मेषादि छः राशिमें हो तौ धन करे और तुलादि छः राशिमें हो तौ ऋण करे तब वह शीघ्रस्पष्ट ग्रह होताहै. परंतु यह मन्दफल और शीघ्रफल ये दोनों मंगलमें प्रथमके जो फल वह आधे करके देवैं.

अब स्पष्टगति लानेकी रीति कहतेहैं ।

शीघ्रोच्चके गतिसे मन्दस्पष्ट गतिको घटादेवै वह शी-

घ्रकेन्द्रकी गति होती है. उसी शीघ्रकेन्द्रके गतिको ज्याका जो भोग्यखंडक उसीसे गुणा करे और उस गुणनफलको ४० चालिससे गुणा करे जो गुणनफल हो उसको अलग पृथक् स्थानमें धरे, फिर शीघ्रफलके नीचे लिखेहुवे मूलको लेकर उसको ७ से गुणा करे जो गुणनफल मिले उसीका पृथक् धरे हुवे गुणनफलमें भाग देनेसे जो फल लब्ध होवै वह गतिफल होता है. उस गतिफलको गतिमेंसे घटादेवै तब वह स्पष्टगति होती है. जब

शीघ्रोच्चकी गतिमेंसे नहि घट सकै तौ उसी गतिफलमेंसे शीघ्रोच्चकी गतिको घटादेवै वह स्पष्ट वक्रगति होती है.

अब ग्रन्थकार स्वनाम कथनपूर्वकग्रंथकी समाप्ती करते हैं

श्रीमच्छागरसन्निधौ सुरमणिग्रामे क
राचीपुरे भारद्वाजकुलोद्भवो द्विजवरो
दैयालशर्मात्मजः ॥ रूपीचन्द्रहवै तदं
धिभजनादालोक्य खेटागमान् चक्रे
ज्योतिषभूषणं च विलसत्सिद्धान्तचि
न्तामणिम् ॥ १ ॥

भा०टी०—समुद्रके समीपप्रदेशमें कराचीनामक प्रांत है उसमें सुरमणिनामका एक ग्राम है उस ग्राममें निवास करनेवाले भारद्वाजगोत्री और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ भेरे पिताजी

दयालराम दैवज्ञ तिनके चरणारविन्दकी सेवा करनेसे अनेक ज्योतिषग्रन्थोके अवलोकनसे जो कुछ ज्ञान मुझ रूपचन्द्र दैवज्ञको प्राप्त हुआ है तिसके अवलम्बनसे ज्योतिषशास्त्रके भूषणभूत इस सिद्धान्तचिन्तामणिनामक करणग्रन्थको मैंने रचा है ॥ १ ॥

बाणाशिवसुचन्द्रेद्दे ह्याश्विनस्यासिते दले ॥
 प्रातःकाले द्वितीयायां तिथौ च गुरुवासरे ॥ १ ॥
 चिन्तामण्याख्यग्रन्थस्य शस्तां नाम्ना सुबोधिनीम् ॥
 दैवज्ञसीतारामोऽहं भाषाटीकामपीपरम् ॥ २ ॥

इति श्रीरूपचन्द्रदैवज्ञकृतौ सिद्धान्तचिन्तामण्याख्यकरणग्रन्थः कौंकणदेशान्तर्गत (राजपट्टण) ग्रामवास्तव्येन मुम्बापुरीस्थगोकुलदासतेजपालसंस्कृताविद्यालयप्रधानाध्यापकश्रीमूलशंकरदैवज्ञानां सान्निध्याधिगतवियेन जांमेकरकुलोत्पन्नश्रीयुतश्रीकृष्णात्मजसीतारामशर्मणा विरचितयसुबोधिण्याख्यया भाषाटीकया सनाथीकृतः समाप्तिमगमत् ॥ शुभं भवतु ॥

समाप्तम्.

जाहिरात.

वर्षप्रबोध मूल और भाषाटीकासहित.

यह ग्रन्थ तेजीमन्दी बतानेके लिये परमोपयोगी है इसमें सालभरका सब वृत्तात पूर्णरितिसे लिखा गयाहै इस सर्वोपयोगी ग्रन्थका मूल्य १२ आना डा. म. ३ आना. है.

ताजिकनीलकंठी भाषाटीकासहित.

यह ग्रन्थ ताजक विषयमें सर्वोत्तम है, अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है उत्तम कागज मूल्य १ रु ८ आ. डा. म. ५ आना.

मुहूर्तप्रकाश मूल भाषाटीकासहित.

मुहूर्त विषयका ऐसा अनुपम ग्रन्थ आजतक कहीं नहीं छपाहै मुहूर्तसंबधी कोई बात इसमें नहीं छोड़ी गईहै जो बातें सैकड़ों ग्रन्थोंके पठन पाठनसे भी मिलना दुर्लभहै उन सबका संग्रह इस ग्रन्थमें पूर्ण रितिसे किया है मूल्य १ रु. ८ आ. डा. म ४ आना.

हनुमत्पंचांग.

इसमें हनुमत्प्रादुर्भाव, पटल पद्धति, कवच, पंचमुक्तकवच, एकदशमुख-कवच, सहस्रनाम, हकारादि सहस्रनाम, स्तोत्र, अष्टक, मंत्रोद्धार, अनुष्ठान आदि विविध विषयहै रेशमी गुट्टका मूल्य १॥ रु ८ आ. म. ३ आना.

नारायणमहातन्त्र मूल भाषाटीकासहित.

इसमें वशीकरण, मोहनादि मंत्र दिये गयेहै मूल्य ३ आना.

संस्कृत प्रवेशिका.

चलिये लीजिये देर न घींजिये—विना गुरुके संस्कृत भाषाका अभ्यास करना चाहतेहो तो इससे उत्तम पुस्तक आपको नहीं मिलसकती है. इसमें संस्कृतका व्याकरण हिन्दी भाषामें लिखा गयाहै मूल्य १० आना.

अष्टाध्यायी भाषाटीकासहित.

पाणिनीय व्याकरणही सत्कृतके सब व्याकरणोंका मूलाधार है सिद्धा-तादि सब कौमुदियोंमें येही सत्र व्याप्य व्यापक रूपसे विराजमान है इस छोटेसे ग्रन्थको याद करलेनेसे मनुष्य पूर्ण व्याकरणी होजाताहै मूल्य २ रु. डा. म. ६ आना.

योगवासिष्ठ.

मुमुक्षु वैराग्यप्रकरण सस्कृत श्लोक और भाषाटीका ऐसी सुंदर सुल-
लित है साधारण पत्रा मनुष्य भी भली भौति समझ सकता है आप लोग इस
अपूर्व ग्रन्थके लेनेमें न चूकिये मूल्य विलायती कपडेकी जिल्दका २ रु.
कमरकी जिल्दका १॥ रु.

निर्णयसिंधु मूल भाषाटीकासहित.

निर्णयग्रयोमें यह ग्रन्थ सर्वश्रेष्ठ है, निर्णय विषयका जब कोई झगडा
होता है, तब हिमालयसे लेकर सेतुब्रध रामेश्वरतक विन्दुमात्र इसी ग्रन्थकी
शरण लेतेहैं, कपडेकी जिल्द मूल्य ६ रु. डा. म. १२ आना.

शिक्षाभूषण.

आजकल धनी साहूवार और व्यापारियोंका कार्य बहुतायतसे अंग्रेजोंके
साथ रहताहै परन्तु अंग्रेजी न पढे रहनेके कारण उनके साथ वार्तालापामें मुह
ताकते रहजातेहैं इस पुस्तकके याद कर लेनेसे बातचीत करना तार लिखना
पढना आदि आवश्यकीय बातें आसकती हैं २५० पृष्ठकी बिकने मोटे कागजपर
विलायती कपडेकी जिल्दकी बंधीहुई पुस्तकका दाम २ रुपया है ।

पञ्चीवर्षर्दीपक मूल भाषाटीकासहित.

इसमें जन्मपत्र और वर्ष बतानेकी विधि उत्तम प्रकारसे दी गई है यह पु-
स्तक ज्योतिषियोंको परमोपयोगी है मूल्य १। रु. डा. म. २ आना.

भर्तृहरिशतकत्रय.

श्लोकके ऊपर अन्वयके अकनीचे सस्कृत टीका फिर भाषाटीका दी है
एकबात और भी विशेषकी है कि महाराज प्रतापसिंहजीने जो इसके प्रत्येक
श्लोकोंके दोहा छाप्य कुडलिया आदि रचिये वेभी प्रत्येक श्लोकके नीचे लगा
दिपेहैं जो महाशय सरिद चुके हें वे एकवार फिरमौ इसे अवश्य सरिदेंगे मूल्यभी
वही है १ रु. डा. म. २ आना.

ज्योतिषसार भाषाटीकासहित.

जिसमें २३० श्लोक अधिक और बढ़ाये गये हैं इसके पढनेसे पाठ-
कोंको ज्योतिषके किसी ग्रन्थकी आवश्यकता न रहेगी, बल्कि माया बहुतही
मनोहरहै मूल्य १२ आना डा. म. २ आना.

जातकालंकार.

सस्कृत और भाषाटीकासहित बडाही उत्तमहै मू. ८ आ. डा. म. १ आ.

वर्षज्ञान भाषाटीकासहित.

यह ग्रंथ तेजी मन्दी बतानेके लिये सर्वोपरि है जिसमें तेजी मन्दी आदिका फल पूर्णरीतिसे लिखामयाहै. मूल्य ८ आना.

केरलप्रश्न भाषाटीकासहित.

इससे अनेकानेक प्रश्न जो चाहिये प्रत्यक्ष फल मिलाकर देख लीजिये ऐसां ग्रंथ आजतक छपाही नहीं है मूल्य १ आ, डा. म. १ आना.

छींक तथा शकुनविचार.

अर्थात् भङ्गलीवर्षा छींक आदिके प्रश्न ऐसे मिलते हैं जो मंगाकर प्रत्यक्ष निश्चय करलेवें, मूल्य २ आना.

इनुमानज्योतिष.

इसमें जो चाहो प्रश्न कर फल तुरत मिला देखिये इस अमूल्य ग्रन्थका मूल्य ३ आना डा. म. ॥ आना.

बृहत्स्तोत्ररत्नाकर.

इसमें १८१ स्तोत्र हैं फिर अधिकताही क्याहै कि प्रवासमें भी पाकिटमें रखसक्तेहैं देखिये १८१ स्तोत्रोंके दाम सिर्फ ८ आना डा. म. १ आना.

हिन्दीगणितप्रकाश.

जिसमें हिसाब गणित बालकोंके लिये अति लाभदायकहै मूल्य १ आना डा. म. १ आना.

यज्ञोपवीत भाषाटीकासहित.

सर्वोत्तम नवीन छपा तैयार है मू० ८ आ और मूल मात्र २॥ आ.

यवनजातक भाषाटीकासहित.

यह ज्योतिषका ग्रंथ सर्वोपयोगी सबको पास रखने योग्य है मूल्य ८ आना डा. म. ॥ आना.

लीलावती भाषाटीकासहित.

गणितमें सर्व ग्रन्थोंमें सर्वोत्तम सर्व मान्य है ग्लेजका २ रु० रफका १॥ रु० डा. म. २ आना.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

पं० श्रीधर शिवलाल,

‘ज्ञानसागर’ छापाखाना—बम्बई.

॥ अथ ब्रह्मपक्षे सिद्धांतचिंतामणिः ॥

रथे रेकांकपंक्तिः										रथेर्दशांकपंक्तिः										रथेः दशांतंकपंक्तिः										रथेः तह			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	२	३	४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	१	२	३
५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	५९	५८	५७	५६
८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	८	९	१०	११
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	१०	२०	३०	४०

॥ अथ चक्रमिति क्षिपकाः ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१३	११	९	८	६	४	३	२	१	०	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१६	१०	५	३	२	१	०	०	०	०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१७	१०	५	३	२	१	०	०	०	०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९

॥ अथ ब्रह्मपक्षे सिद्धांतचिंतामणि ॥

अथ चंद्रकांतपंक्तिः										अथ त्रिकोणपंक्तिः										चंद्रमहात्मा					
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	२	३	४		
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३		
१३	२४	५	१३	५	११	२	१५	२०	११	२३	५	१०	२०	१०	२२	४	१५	२३	११	२०	२२	११	२५		
१०	२१	११	४२	५३	३	१४	२४	३५	४	१५	३१	१०	२४	२०	४१	३२	१०	४०	२५	५	४३	२१	४२	३	२५
३४	१	४४	११	५४	२९	४	३१	१३	४०	३०	१५	३०	४१	३	५३	४१	३०	३०	४५	५३	०	१५	३१	४५	२
१२	४५	३०	२०	२२	१५	७	०	५२	४५	३०	१६	१	४५	३२	१०	३	४०	३३	६	३९	१२	४५	१०	३४	३

॥ अथ चक्रमितिर्द्वैपकाः ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०		
१०	६	२	२९	२५	२१	१७	१३	१०	६	३	२०	२५	२१	१७	१३	१०	६	३	२	२०	२५	२१	१७	१३	१०	६	३	२	२०	२५	२१	१७
३	३०	११	५	११	३२	४६	०	१४	२०	४२	५५	९	२३	३०	५१	४	१०	३३	४६	०	१४	३०	४१	५५	९	२३	३३	४०	५	१४		
११	४०	२९	१०	५	५६	४५	३४	३३	१२	१	५०	३९	२०	१०	६	५५	४४	३३	२२	११	०	४१	३०	२०	१०	६	५	४	३३	२२	११	

॥अथ ब्रह्मपक्षसिद्धांतचिंतामणिः॥

अथ भौमिकांकपंक्तिः										अथ भौमदशांकपंक्तिः										अथ भौमशतांकपंक्तिः										संख्यांकः
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६
२१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५
२६	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७०	७१	७१	७२	७२	७३	७३	७४	७४	७५	७५
२८	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७५	७६	७६	७७	७७	७८	७८	७९	७९	८०

॥अथ चक्रमिति क्षेपकः॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
७	५	३	१	०	१०	८	६	४	२	०	११	९	७	५	३	१	०	१०	८	६	४	२	०	११	९	७	५	३	१	११
१४	१९	२३	२८	२	७	११	१६	२०	२५	२९	३	८	१३	१७	२१	२६	०	५	९	१४	१८	२३	२७	३	६	११	१५	२०	२४	२८
५०	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७	९१	९५	९९	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६३	६७	७१
११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७	९१	९५	९९	३	७	११	१५	२०	२४	२८	३२

॥ अथ ब्रह्मपक्षसिद्धान्तितानामणिः ॥

अथ बुधश्री प्रोचैकांकपक्तिः		अथ बुधश्री प्रोचैदशांकपक्तिः		अथ बुधश्री प्रोचैशतांकपक्तिः		सहस्रांशः													
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	६०	६४	६८	७२	७६	८०
५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	११०	११६
१२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५
२१	४२	३	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९४

॥ अथ चक्रमितिक्षेपकाः ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२	१०	६	३	१०	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५
२४	१८	१३	८	३	१२	१७	१०	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८
८	५३	३८	२३	९	५४	३९	२५	१०	५५	४०	२६	११	५६	४१	२७	१२	५७	४२	२८	१३
०	१८	३६	५४	७२	९०	१०८	१२६	१४४	१६२	१८०	१९८	२१६	२३४	२५२	२७०	२८८	३०६	३२४	३४२	३६०

॥ अथब्रह्मपक्षेसिद्धांतचिंतामणिः ॥

अथशुक्रैकांकपंक्तिः										अथशुक्रदशांकपंक्तिः										अथशुक्रशतांकपंक्तिः										सहस्रपंक्तिः																			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६६	६९	७२	७५	७८	८१	८४	८७	९०	९३	९६	९९	१०२	१०५	१०८	१११	११४	११७										
२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	५९	६२	६५	६८	७१	७४	७७	८०	८३	८६	८९	९२	९५	९८	१०१	१०४	१०७	११०	११३	११६	११९	१२२	१२५	१२८	१३१	१३४	१३७	१४०											
७	१५	२३	३०	३६	४३	५०	५६	६३	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११६	१२३	१३०	१३६	१४३	१५०	१५६	१६३	१७०	१७६	१८३	१९०	१९६	२०३	२१०	२१६	२२३	२३०	२३६	२४३	२५०	२५६	२६३											
६४	१०३	१४१	१७९	२२७	२७५	३२३	३७१	४१९	४६७	५१५	५६३	६११	६५९	७०७	७५५	८०३	८५१	८९९	९४७	९९५	१०४३	१०९१	११३९	११८७	१२३५	१२८३	१३३१	१३७९	१४२७	१४७५	१५२३	१५७१	१६१९	१६६७	१७१५	१७६३	१८११	१८५९											

॥ अथचक्रमितिक्षेपकाः ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
३	७	१०	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	६३	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११६	१२३	१३०	१३६	१४३	१५०	१५६	१६३	१७०	१७६	१८३	१९०	१९६
१२	२६	४०	५४	६८	८२	९६	११०	१२४	१३८	१५२	१६६	१८०	१९४	२०८	२२२	२३६	२५०	२६४	२७८	२९२	३०६	३२०	३३४	३४८	३६२	३७६	३९०	४०४	४१८	४३२
२	१५	२९	४३	५६	७०	८४	९८	११२	१२६	१४०	१५४	१६८	१८२	१९६	२१०	२२४	२३८	२५२	२६६	२८०	२९४	३०८	३२२	३३६	३५०	३६४	३७८	३९२	४०६	४२०
०	२५	५०	७५	१००	१२५	१५०	१७५	२००	२२५	२५०	२७५	३००	३२५	३५०	३७५	४००	४२५	४५०	४७५	५००	५२५	५५०	५७५	६००	६२५	६५०	६७५	७००	७२५	७५०

पुस्तक

३.	०	०	१	२				
४.	०	०	१	२				
५.	०	०	१	२				
६.	०	०	१	२				
७.	०	०	१	२				
८.	०	०	१	२				
९.	०	०	१	२				
१०.	०	०	१	२				
११.	०	०	१	२				
१२.	०	०	१	२				
१३.	०	०	१	२				
१४.	०	०	१	२				
१५.	०	०	१	२				
१६.	०	०	१	२				
१७.	०	०	१	२				
१८.	०	०	१	२				
१९.	०	०	१	२				
२०.	०	०	१	२				
२१.	०	०	१	२				
२२.	०	०	१	२				
२३.	०	०	१	२				
२४.	०	०	१	२				
२५.	०	०	१	२				
२६.	०	०	१	२				
२७.	०	०	१	२				
२८.	०	०	१	२				
२९.	०	०	१	२				
३०.	०	०	१	२				
३१.	०	०	१	२				
३२.	०	०	१	२				
३३.	०	०	१	२				
३४.	०	०	१	२				
३५.	०	०	१	२				
३६.	०	०	१	२				
३७.	०	०	१	२				
३८.	०	०	१	२				
३९.	०	०	१	२				
४०.	०	०	१	२				
४१.	०	०	१	२				
४२.	०	०	१	२				
४३.	०	०	१	२				
४४.	०	०	१	२				
४५.	०	०	१	२				
४६.	०	०	१	२				
४७.	०	०	१	२				
४८.	०	०	१	२				
४९.	०	०	१	२				
५०.	०	०	१	२				
५१.	०	०	१	२				
५२.	०	०	१	२				
५३.	०	०	१	२				
५४.	०	०	१	२				
५५.	०	०	१	२				
५६.	०	०	१	२				
५७.	०	०	१	२				
५८.	०	०	१	२				
५९.	०	०	१	२				
६०.	०	०	१	२				
६१.	०	०	१	२				
६२.	०	०	१	२				
६३.	०	०	१	२				
६४.	०	०	१	२				
६५.	०	०	१	२				
६६.	०	०	१	२				
६७.	०	०	१	२				
६८.	०	०	१	२				
६९.	०	०	१	२				
७०.	०	०	१	२				
७१.	०	०	१	२				
७२.	०	०	१	२				
७३.	०	०	१	२				
७४.	०	०	१	२				
७५.	०	०	१	२				
७६.	०	०	१	२				
७७.	०	०	१	२				
७८.	०	०	१	२				
७९.	०	०	१	२				
८०.	०	०	१	२				
८१.	०	०	१	२				
८२.	०	०	१	२				
८३.	०	०	१	२				
८४.	०	०	१	२				
८५.	०	०	१	२				
८६.	०	०	१	२				
८७.	०	०	१	२				
८८.	०	०	१	२				
८९.	०	०	१	२				
९०.	०	०	१	२				
९१.	०	०	१	२				
९२.	०	०	१	२				
९३.	०	०	१	२				
९४.	०	०	१	२				
९५.	०	०	१	२				
९६.	०	०	१	२				
९७.	०	०	१	२				
९८.	०	०	१	२				
९९.	०	०	१	२				
१००.	०	०	१	२				

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

॥ अथरविमदक्रुडुमाशोपिचिद्रुमुजफलसारिणी ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५	११०	११५	१२०	१२५	१३०	१३५	१४०	१४५	१५०	

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	

६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३

रपलसारिणी ॥

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

प्रा	०	१
मप +	१	२
दप +	११	१२
मिथु +	२३	२४
कक +	३५	३६
मिह +	४७	४८
कन्याप	५९	६०
तुलप	७२	७३
दक्षिप	८४	८५
धनप	९६	९७
मकरप	१०८	१०९
कुंभध	१२०	१२१
मीनप	१३२	१३३

अफलसारिणीप्रियकेन्द्रवृद्धा

०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

॥ अथ बुधशुक्रके द्वांश मितरीषफलं ॥

अंश	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
अंश	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
शीघ्र	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
अंतरं	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
सूत्रं	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
अंश	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
शीघ्र	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
अंतरं	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
सूत्रं	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०

॥ अथयुक्तीप्रफलसारिणी ॥

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
शीघ्र	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
अंतरं	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
मूलं	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३
अंश	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
शीघ्र	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८
अंतरं	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
मूलं	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
अंश	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८
शीघ्र	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
अंतरं	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
मूलं	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०

01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	00
01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	00
01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	00
01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	00
01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	00

रुफ्त

अथग्रासांयुलोपरिमध्यस्थितिद्यथादिकोषकम्.

अथचंद्रग्रासोपरिमर्दद्यथादि

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
२	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०
३	३	६	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८२	८८	९४	१००	१०६	११२	११८	१२४	१३०	१३६	१४२	१४८	१५४	१६०	१६६	१७२
४	४	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५२	१६०	१६८	१७६	१८४	१९२	२००	२०८	२१६	२२४	२३२
५	५	१०	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५२	१६०	१६८	१७६	१८४	१९२	२००	२०८	२१६	२२४	२३२
६	६	१२	१८	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५२	१६०	१६८	१७६	१८४	१९२	२००	२०८	२१६	२२४	२३२
७	७	१४	२२	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५२	१६०	१६८	१७६	१८४	१९२	२००	२०८	२१६	२२४	२३२	२४०
८	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५२	१६०	१६८	१७६	१८४	१९२	२००	२०८	२१६	२२४	२३२	२४०
९	९	१८	२८	३६	४४	५२	६०	६८	७६	८४	९२	१००	१०८	११६	१२४	१३२	१४०	१४८	१५६	१६४	१७२	१८०	१८८	१९६	२०४	२१२	२२०	२२८	२३६	२४४
१०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०	१७०	१८०	१९०	२००	२१०	२२०	२३०	२४०	२५०	२६०	२७०	२८०	२९०	३००

अथनतं रंकाका ९० हंतंयुदलेनभक्तंयदं द्रादिफलंतसुल्यांशुः कोषकात्फलनं

	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
३	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	
४	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९४	९९	१०४	१०९	११४	११९	१२४	१२९	१३४	१३९	१४४	१४९
५	५	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८२	८८	९४	१००	१०६	११२	११८	१२४	१३०	१३६	१४२	१४८	१५४	१६०	१६६	१७२	१७८
६	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०	९६	१०२	१०८	११४	१२०	१२६	१३२	१३८	१४४	१५०	१५६	१६२	१६८	१७४	१८०
७	७	१४	२०	२६	३२	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	११०	११६	१२२	१२८	१३४	१४०	१४६	१५२	१५८	१६४	१७०	१७६	१८२
८	८	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८२	८८	९४	१००	१०६	११२	११८	१२४	१३०	१३६	१४२	१४८	१५४	१६०	१६६	१७२	१७८	१८४
९	९	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०	९६	१०२	१०८	११४	१२०	१२६	१३२	१३८	१४४	१५०	१५६	१६२	१६८	१७४	१८०	१८६
१०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०	१७०	१८०	१९०	२००	२१०	२२०	२३०	२४०	२५०	२६०	२७०	२८०	२९०	३००

॥ अथ निम्नोक्त नामक यो सुजांशोपरिमथ्यलंबनकोष्टकः ॥

सुजांशः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०					
लंबनं	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
अंतरं	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
सुजांशः	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०					
लंबनं	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०						
अंतरं	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
सुजांशः	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०					
लंबनं	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०							
अंतरं	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

॥ अथकंति सारिणी ॥

अंशाः	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
१	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००

॥अथनतांशोपरिअंगुलादिनतिकीष्टकम् ॥

नतांशा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
नतिः	१०	२५	४०	५५	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०	१७०	१८०	१९०	२००	२१०	२२०	२३०	२४०	२५०	२६०	२७०	२८०	२९०	३००	३१०	३२०	
अंतरम्	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५	११०	११५	१२०	१२५	१३०	१३५	१४०	१४५	१५०	१५५	१६०
	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०	१७०	१८०	१९०	२००	२१०	२२०	२३०	२४०	२५०	२६०	२७०	२८०	२९०	३००	३१०	३२०	
	१५	२५	३५	४५	५५	६५	७५	८५	९५	१०५	११५	१२५	१३५	१४५	१५५	१६५	१७५	१८५	१९५	२०५	२१५	२२५	२३५	२४५	२५५	२६५	२७५	२८५	२९५	३०५	३१५

॥अथसूर्यग्रासोपरिमध्यस्त्रितिघट्यादि ॥

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	६	२०	५०	९५	१२२	१३७	१४०	१४३	१४६	१४९	१५२	१५५
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२६	१८	११	८	५	३	२	१	१	१	१	१

॥ अथ लिख्यते ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

